CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

G.2

कौशिकायन

[भोजपुरी प्रबन्ध काव्य]

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक ● अतुल-बन्धु, शिवाजी पथ, यारपुर, पटना–१
कवि ● अविनाश चन्द्र विद्यार्थी
संस्करण ● पहिल : अक्टूबर १९७३ ई०
सर्वाधिकार ● प्रकाशक
आवरण-शिल्प ● चन्द्रशेखर वर्मा
दाम ● ६ रुपया २५ पइसा
मुद्रक ● जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना–४

KAUSHIKAYAN
Bhojpuri Poetry
by
Avinash Chandra Vidyarthi
Price : Rs 6·25 only

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठक-श्रोता से

कई कारणों से अपने यहाँ सत्साहित्य का प्रचार-प्रसार एक सीमित समुदाय तक संकुचित रहा है। अब आवश्यकता है उसके शीघ्रातिशीघ्र विस्तार की। संस्कार और सुरुचि का साक्षरता से सरोकार नहीं रखना भी लेखन, संपादन अथवा प्रकाशन के मार्ग में कम अवरोध नहीं उपस्थित करता। विदेशों की बात छोड़ दें, स्वदेश के ही अन्य कई भागों में पुस्तक-प्रणयन या पठन की परिपाटी अपेक्षाकृत सराहनीय है। जहाँ गुलामी की मनोवृत्ति नहीं थी, उस क्षेत्र के निवासियों ने अपने घर की भाषा की धरोहर गँवाई नहीं, यहाँ तक कि अपनी विशिष्टता को सुदृढ़ रखने के लिए उन्होंने औरों की दृष्टि में संकुचित लगनेवाले स्वरूप पर भी शायद ही कभी कोई झेंप प्रकट की हो।

भोजपुरी के पास शक्ति अथवा साधनों की कमी नहीं। उसके यहाँ अभाव है तो बस उस भाव का जिसकी धात्री क्षेत्र विशेष की धरती हुआ करती है। अखिल विश्व में व्याप्त अगोचर 'परमेश्वर' को अवध के आँगन में उतरना पड़ा, समग्र भारत को अपना भवन माननेवाले भोजपुरियों को भी अपनी जननी-जन्मभूमि के पास पहुँचना होगा। आवश्यकता है तप की। 'कोशल', 'काशी' और 'करूष' आदि नाम नये नहीं हैं। शालीनता की एक सुदीर्घ परंपरा 'ऋग्वेद' से 'गाँधीवाद' तक पाई जा सकती है जिस भू-भाग पर उसका अतीत, वर्तमान अथवा भविष्य कदापि उपेक्षणीय नहीं हो सकता। भोजपुरी क्षेत्र के इतिहास के एक अत्यंत प्राचीन किन्तु चिर नवीन पृष्ठ को सहज-स्पष्ट ढंग से आम-फ़हम भाषा में खोलने का प्रयास प्रस्तुत पुस्तक में है। सुधी जन इसे स्वयं पढ़कर और अपढ़ बंधु इसका पाठ साक्षर सज्जनों के मुँह से सुनकर आनंदित होंगे, इसी आशा के साथ कागज और छपाई की आसमान चढ़ी महँगाई को नज़र अंदाज़ करके भोजपुरी प्रकाशन की दिशा में कदम उठाया गया है। ग्राहकों में यदि सुरुचि-संपन्नता का आभास मिलता जायेगा तो अन्य कृतियाँ भी प्रकाश में आयेंगी।

—प्रकाशक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, एडवोकेट

अध्यक्ष, भोजपुरी परिवार, पटना

आ

सम्पादक, त्रयमासिक 'अँजोर'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छूँछ के उपहार

(समरपन)

: १ :

करम-धरम हमार अबले रहत आइल बाँव
जनम से बा धइल गइल अपार अजसो नाँव
अहगरत धवलीं बहुत, ना मिलल मनगर ठाँव
भइल नयन-जुड़ाँव लखि 'पाण्डेय जी' के पाँव

: २ :

गइल घर के रहल के कब हाल पूछनिहार ?
मइल मटिगर देहि पर ना चढ़ल चटक सिङार
रहनि अछरंगी, करीं कवना मुँहें सतकार ?
सुजस भरल 'सहाय जी' ! लीं छूँछ के उपहार

—विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आभार

मानीला —

१. 'कौशिकायन' के पहिल पाठ सुननिहार उदार त्रिलोचन शास्त्री जी के आ भोजपुरी के हितैषी नेही नागार्जुन जी के जे लोग हमरा हुलास के भार बाँटल ;

२. भोजपुरी के अलख जगवनिहार रघुवंश नारायण सिंह जी के जे अपना लठिधर हाथ में आसिरवाद ले के हमरा आगा ठाढ़ भइले ;

३. श्री पाण्डेय सुरेन्द्र (प्राचार्य, राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय, पटना) के जे 'कौशिकायन' का मोहड़ा के सँवार-सिङार के भार हमरा कपार पर से दावा का दिमाग से हटवले ;

४. आचार-बिचार में एक, नेक लछुमन जी (नगेन्द्र प्रसाद सिंह) के जिनिका 'जयदुर्गा प्रेस' में पारिवारिक अपनइती पवलीं ;

५. एह गँवार का उचार के सुतार जुटवनिहार 'आर्यावर्त' के संपादक जयकांत मिश्र जी आ इण्डिया मशीनरी के मालिक जगन्नाथ सिंह जी का छोह के ;

सर्वश्री जगन्नाथ, अनिल कुमार राय 'आंजनेय', अवधेश प्रधान, रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', प्रो० ब्रजकिशोर, डा० वसन्त कुमार, पाण्डेय कपिल, भैरव नाथ पाण्डेय, सत्यदेव नारायण सिनहा, तैयब हुसेन 'पीड़ित', नरेश 'नीरव', रवीन्द्र नारायण सिनहा, विश्वनाथ दूबे, उमेश पाण्डेय, रामवृक्ष राय 'विधुर' आ प्रो० रामेश्वर नाथ तिवारी अस छोट भा हम-उमिरिया भाइन का नेह के;

सर्व श्री गणेश चौबे, कुलदीप नारायण राय 'झड़प', रमाशंकर राय, परमेश्वर राय 'राजेश', कन्हैया जी, गोविन्द झा आ जगदीश त्रिगुणायत अस बड़का भइया लोगन का दुलार के ;

गुरुवर प्राचार्य शिवबालक राय जी का असीस के ;

आ

शिष्य कल्प जगन्नाथ प्रसाद शर्मा का सरधा-भाव के ;

६. हम जे कुछ बानीं, भा होखबि, ओकरा पाछा अलम सरूप हमरा से बढ़ि के कतने के जिनिगी बनवनिहार अपना 'मास्टर साहेब' सुरुचि-सागर सत्यनारायण लाल जी का चरन के;

आ

७. पछिला पचीस बरिस का भीतर हमरा जवरे गँथाइल अपना ओह परिवार का हिआव के जे प्रकाशन के दुस्साहस कइलसि हा ।

—विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आसिरबाद

रिगवेद का करीव सब मण्डलन में भोज लोग के गुनगान बा। इहाँ रिगवेद के मण्डल १० सूक्त १०७ के चार गो आ सूक्त ११७ के एगो मन्त्र भोज गन का परिचय में देल जाता।

न भोजा मम्रुर्न न्यर्थमीयुर्न रिष्यन्ति न व्यथन्ते ह भोजाः।
इदं यद्विश्वं भुवनं स्वश्चैतत्सर्वं दक्षिणेभ्यो ददाति॥

—ऋ० १०।१०७।८

(भोज गन कबो मरे ना, ना नीच गति-मति के होखे ना ओकरा व्यथे होखे। एह संसार के सब सुख ओह लोग के दक्षिने देले।)

भोजा जिग्युः सुरभिं योनिमग्रे भोजा जिग्युर्वध्वं या सुवासाः :
भोजा जिग्युरन्तः पेयं सुराया भोजा जिग्युर्ये अहूताः प्रयन्ति॥

—ऋ० १०।१०७।९

(भोज लोग सुगन्धि देवे वाला घर के पहिले पावेला। बढ़िया कपड़ा से सजल बधू पहिले मिलेली। भोजे लोग का बढ़िया पेय पदार्थ पहिले मिलेला। जे वे बोलवले दोसरा प चढ़ मारेला उनका के भोज लोग जीत लेलन।)

भोजायाश्वं सं मृजंत्याशुं भोजायास्ते कन्या शुम्भमाना।
भोजस्येदं पुष्करिणीव वेश्म परिष्कृतं देवमानेव चित्रं॥

—ऋ० १०।१०७।१०

(भोज लोग खातिर तेज घोड़ा सजावल जाले। भोजे लोग का बढ़िया भूसन-वसन से सजल कन्या सुभ होली। भोजे लोग के घर तालाव नियर साफ-सुथरा आ देवता नियर लोग से भरल रहेला।)

भोजमश्वाः सुष्ठुवाहो वहन्ति सुवृद्रथो वर्तते दक्षिणाया।
भोजं देवासोऽवता भरेषु भोजः शत्रून्त्समनीकेषु जेता॥

—ऋ० १०।१०७।११

(भोज लोगन के घोड़ा वरिआर आ वहन्तू होले जे बड़े-बड़े रथन में चलेलन। विजय चाहेवाला लोगन का लड़ाई में भोजे लोग के रछेआ करे के चाहीं काहे कि लड़ाई जीते के ताकत ओही लोग का बा। जे भरे सेही भोज ह।)

स इद्भोजो यो गृहवे ददात्यन्नकामाय चरते कृषाय।
अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायं॥

—ऋ० १०।१०७।३

RajGuru Math, Shivalá, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(भूखा, नंगा, दूबर-पातर भिक्षा के अन्न पर जीयेवाला लोग के भोज लोग अन्न दान करेलन। ओह लोग का जग्य खातिर अपनहीं सब कुछ मिल जाला। उहे साँचो के भोज ह जे पराया भा शत्रु का प्रजा में आपन सखा भा हीत कीन लेला।)

इहे भोज लोग विश्वामित्र के जजमान रहन जे करूष देस में आ ओकरा बाहरो दूर-दूर ले फैल गइल रहन। जे जेने गइल से देस, काल, पात्र पर आपन नाँव ध लेल। एही से सात्वत् भोज, दाण्डक्य भोज, विदर्भ भोज, कराल भोज, कुन्ती भोज वोगैरह नाँव ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण, रामायण, महाभारत, गीता, पुरानन, अर्थशास्त्र आ कामसूत्र में मिलता। ई लोग मगध, जे पहिले मग आ कीकट कहात रहे, सेकरा सटले रहे। एही से विश्वामित्र ऋक् ३ सूक्त ५३ का मन्त्र में कहले कि "किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावो नाशिरं दुह्रे न तपन्ति धर्मम्।" (कीकट लोग गाय का करिहें ? ना एह लोग का गोरस दूहे आवे ना घीव तपावे आवे।) एही सूक्त का मन्त्र ७ में बा—

इमे भोजा अंगिरसो विरूपा दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः॥

These sacrificers are the Bhojas of whom the diversified Angiras are the priest and the heroic sons of the expeller (of the foes of the gods from the heaven) bestowing riches upon Vishwamitra at the sacrifices of the thousand (victims) prolong his life.

एक जने इहो अरथ बतावतारे :—

(इमे) ये (भोजाः) प्रजाओं के पालक रक्षक (अगिरसः) देह में प्राणों के तुल्य राष्ट्र में जीवित, जागृत एवं अंगारों के सदृश तेजस्वी (विरूपा) विविध रूपोंवाला (दिवः) प्रकाशमान सूर्य के तुल्य (असुरस्य) बलवान सेनानायक के (पुत्रासः) पुत्रों के तुल्य (वीराः) वीर, वीर्यमान, बलवान पुरुष (सहस्रसावे) सहस्रों प्रकार के ऐश्वर्यों के लाभ करानेवाले संग्राम में (विश्वामित्राय) सबके स्नेही और सबको मरने से बचानेवाले नायक को (मघानि) नाना प्रकार के ऐश्वर्य (ददतः) देते हुए (आयु प्रतिरन्त) जीव की वृद्धि करें या जीवन व्यतीत करें।

मनु के दस बेटन में एगो करूष रहन। इनके वंसधर लोग कारूष्य छत्रिय कहाइल, जे बड़ा ढीठ आ लड़ाका रहे लोग। एही लोग का देस के नाँव करूष रहे। पुरानन आ काव्यन के कहनाम बा कि ई सोन का पछिम आ गंगा का दखिन रहे। ढेर लोग के कहनाम बा कि गंगा, सोन आ कुकर्मनासा से चउगेठल भूइँ करूष रहे। कुछ लोग 'कारीसाथ' के करूषपुर कहेला। कारीसाथ का सटले 'मसाढ़' बा, जहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एगो लेख मिलल रहे जवना पर करूष देस लिखल रहे। 'वैदिक एज' के लेखक सम्पादक ए० डी० पुसलकर आ आर० सी० मजुमदार बार-बार रीवाँ के चौगिर्द करूष कहत बाड़े। ओह लोग के आधार पार्जिटर, जिम्मर आ वेवर हो सकेलन।

सागर विश्वविद्यालय के श्री कन्हैयालाल अग्रवाल विश्वविद्यालय का बुलेटिन में, एगो लेख लिखले बाड़े "करूष का ऐतिहासिक भूगोल"। वाल्मीकि रामायण, महाभारत आ ढेर पुरानन से श्लोक देके ऊ साबित करे के कोरसिस कइले बाड़े कि सोन के जनम-भूइँ अमरकण्टक से सोन-गंगा-संगम आ उहाँ से कर्वी ले करूष देस रहे। 'कर्वी' के ऊ करूषपुर कहे के चाहत बाड़े। उनुकर कथ वा कि करूष लोग पाछे पछिम ओर बढ़के आपन राजधानी बनावल, ओकर नाँव करूषपुर धइल। उहे बदलत-बदलत कर्वी हो गइल। कर्वी चित्रकूट से एक टीसन एनहीं मानिकपुर-झाँसी रेलपथ के एगो टीसन आ अच्छा मण्डी ह। अगर ई बात ठीक होखे त करूष लोग के राज केन आ बेतवा नदियन तक जरूर जात होई। मानिकपुर जंकशन का चारो तरफ के गाँवन का भाषा के जाँच होखे के चाहीं।

वाल्मीकि रामायण के कथ वा कि गंगा-सरजू के संगम का दखिन करूष के जनपद रहे। वृत्र के वध का बाद इन्द्र का जे पराछित लागल रहे ओकरा के करूष के रिसी-मुनी लोग गंगाजल में स्नान करा के एहिजे उतारल आ उनुका भुखाइल कुक्षि के भोजन से भरल। इन्द्र जब निर्मल, निष्करूष (क्षुधाहीन) भइले त कहले :—

इमौ जनपदौ स्फीतौ ख्यातिं लोके गमिष्यतः।
मलदाश्च करूषाश्च महामंगल धारिणौ॥

—वा० रा०, बालकांड

विश्वामित्र जी राम-लछुमन जवरे चलत खा बतावतानी :—

एतौ जनपदौ स्फीतौ दीर्घकालमरिन्दम्।
मलदाश्च करूषाश्च मुदिता धनधान्यतः॥

— वा० रा०, बालकाण्ड

सत्यव्रत त्रिशंकु के सदेह स्वर्ग भेजेवाला यज्ञ कैमूर का पहाड़ी पर भइल। सब तीर्थन का जल से स्नान करावल गइल। स्नान के जल बहि चलल उहे कुकर्मनाशा भइल, ओकरे श्रम-लाघव खातिर 'कु' छूटि के 'कर्मनाशा' हो गइल।

श्री जयचन्द्र विद्यालंकार के 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' में कहनाम बा कि जब भारतीय इतिहास के पहिला पर्दा उठता तब अयोध्या, करूष आ मिथिला एने, आ अनर्त देस (गुजरात) ओने, इहे चार गो संगठित राज्य लउकताड़े। डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा अपना 'मध्यदेश' में कहताड़े कि "यूरोपीय विद्वानों का यह मत अत्यन्त चिन्त्य है कि आर्यों का मूल निवास-स्थान भारत में पंजाब में था तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंजाब में वे भारत के बाहर मध्य एशिया अथवा पूर्वी योरप से आये थे। ऋग्वेद के लगभग १००० सूक्तों में से केवल दो-तीन में पंजाब की नदियों का उल्लेख है और यदि उन सूक्तों को ध्यान से पढ़ा जाय तो मालूम होता है कि मध्यदेश से ही कोई आक्रमण पंजाव की ओर हुआ था और उसकी स्मृति इन सूक्तों में सुरक्षित है। इन दो-तीन सूक्तों के विरुद्ध ऋग्वेद के सैकड़ों सूक्त ऐसे हैं जिनके ऋषि तथा जिनमें उल्लिखित राजा अनुश्रुति के अनुसार मध्यदेश से संबंध रखते थे। इसके अतिरिक्त योरोपीय विद्वानों के अनुसार भी आर्यों की संस्कृति का प्राचीनतम तथा शुद्धतम रूप भारत में मध्यदेश में ही मिलता है।"

जयचन्द्रजी एह सवाल के भाषा का कसौटी पर कसले बाड़े। उनुकर मत बा कि अगर आर्य लोग ओनं से आइल त उनका भाषा के असली रूप मध्यदेश में कइसे आ गइल।

एह विद्वानन का पहिले के यूरोपीय आ उनुकर अनुआई भारतीय विद्वानन, जवना में डाक्टर अविनाशचन्द्र दास, अध्यापक क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय वगैरह बाड़े, के ई कहनाम कि वेदन के रचना पंजाव, काश्मीर आ अफगानिस्तान में भइल एकदम निराधार बा। विना कवनो तर्क देले, वे साहस बटोरले, सहज भाव से कहल जाता कि वेदन के रचना पुरुव में भइल। रिगवेद के भाषा प्रयाग से पुरुव के भाषा ह। पुसलकर के कहनाम कि रिगवेद कुरु पंचालन के उपज ह एकदम गलत बा। रिगवेद भोजन के देन ह आ ओह घरी के भाषा में वा जवना के तार अबहीं ले टूटल नइखे। एकर समर्थन पार्जिटर के 'असुर इण्डिया' करता। हर्नले के कहनाम बा कि आर्य लोग हिमालय का ओर से पहिले पुरुव भारत में अइले। लोकमान्य तिलक के 'आर्कटिक होम आफ वेदाज' में कुछ अइसने विचार बा। रांगेय राघव के कहनाम बा कि आर्य नागन का सम्बन्ध से अइले। 'पोलिटिकल हिस्ट्री आफ ऐंशिएण्ट इण्डिया' में हेमचन्द्र राय चौधरी के कहनाम बा कि हो सकेला कि वृष्णि आ अन्धक तथा बज्जी आ मल्ल कुरु-पंचालन के पहिले आर्य होखस। 'वैदिक इण्डेक्स' के रचयिता के कहनाम बा कि वेदन के रचना पुरुव में भइल।

इहे वोजह बा कि आज का भोजपुरी में रिगवेद के भाषा के रूप उतर आइल बा। जइसे—"इहे ह धो मनसा, वाचम क्रत, सायं करत, सविता करत, ह भोजा, यद्वाचो ह वाचो, स्वस्ति नावा पार याति" वाक्य-खण्ड वेद से भोजपुरी में आ गइल बा। संवेदन के त कवनो हिसावे नइखे।

डा० ए० पी० वनर्जी शास्त्री के छठवाँ ओरिएण्टल कान्फ्रेंस के रिपोट में कथन बा कि गायत्री-सावित्री मंत्रन के उत्पत्ति बक्सर में भइल जवन 'वेदगर्भ' रहे। उनके कहनाम बा कि भोज लोग विश्वामित्र के जजमान रहन जेकरा के ऊ 'इमे भोजा' कहले बाड़े। ओही में श्री एच० सी० चकलदार के कहनाम बा कि यजुर्वेद के रचना याग्यवल्क का जोग से मिथिला में भइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बिहार रिसर्च सोसायटी' के जरनल, जनवरी १९६० के पन्ना २६१ के कहनाम बा कि गया जिला के सोनपुर आ छपरा के चिरान गाँव के खोदाई में जवन बर्तन मिलल बाड़े स तवन हरप्पा जइसन बाड़े स। अब ई के फरिआई कि पहिले चिरान आ सोनपुर के बर्तन बनल कि हरप्पा के? आजो धोती, कुरता, गमछी के आ मेहरारुन के साड़ी-झूला के जवन पहनावा भोजपुर में बा उहे गुजरातो में त कवन पहिले के ह? गुजरात के लोकगीतन में गंगा-जमुना के गीत गवाला नर्मदा के ना।

जे गोमल के गोमती, हरयू के सरयू आ परुष्णी के रावी कहता सेकरा से के मारामारी करो। वेद के कहनाम बा :—

इमं में गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्णया।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया॥
तुष्टामया प्रथमं यातवे सजूः सुसर्त्वा रसया श्वेत्या त्या।
त्वं सिन्धो कुभया गोमतीं क्रमुं मेहत्न्वा सरथं याभिरीयसे॥
—ऋ० १०।७५।५-६

एह मन्त्र के रचना अगर पंजाब भा आउर ओने भइल रहित त एह में पहिला नाँव कुभा के ना त सिन्धु के अगर उहो ना त परुष्णी के होखे के चाहत रहे। ई एकदम अचरज के बात बा कि गंगा, यमुना, सरस्वती, शुतुद्री के जे क्रम बा ऊ एक ओर से बा बाकी वितस्ता में जाके ई क्रम बिगड़ गइल। जे लोग पंजाब के नदियन के चीन्हे के कोरसिस कइल ऊ एही क्रम प चीन्हे लागल, एह से गोमती के गोमल कह देल। सरयू आउर दूर त ओकरा हरयू कहले। ऊ लोग एह पर खिआल ना कइल कि शुतुद्री माने सतलज आ विपाट चाहे वितस्ता माने व्यास होला। एह दूनों के विश्वामित्रजी तीसरा मण्डल के ३३वाँ सूक्त में स्वसार माने साथे बहेवाली बहिन मनले बाड़े आ बिनती कइले बाड़े कि हम बहुत दूर से रथ में घोड़ा जोत के आइल बानी से तू लोग 'नमध्वग बहता सुपारा' तू लोग नीचे होके बह कि हमरा खातिर सुपाइट हो जाय।

डा० धीरेन्द्र वर्मा के बात के पुष्टि इहे सूक्त करत बा। एह में भरत गण के लेले ऊ ओह पार कहीं चढ़ल चल जात रहन तले राह में सतलज - व्यास से भेंट हो गइल। आगे मन्त्र में इहो कहले बाड़े कि भरत गण पार क गइले।

ई एक दम अबिभौ बा कि गंगा, यमुना, सरस्वती, गोमती आ सरयू के छोड़ के रिगवेद के सब नदियन के नाँव बदल गइल। आज असिक्न्या मरुद्वृधे के के चीन्हीं? ई काहे भइल? सबके सब ओने के नदियन के नाँव काहे बदलल आ एने के सब नदियन के नाँव जइसे के तइसे कइसे रह गइल? एगो मन्त्र में कहत बाड़े :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्सिन्धौ यदसिक्न्यां यत्समुद्रेषु मरुतः सुबर्हिषः।
यत्पर्वतेषु भेषजं।
विश्वं पश्यन्तो बिभृया तनूष्वा तेना नो अधि वोचत।
क्षमा रपो मरुत आतुरस्य न इष्कर्षा विहुतं पुनः॥

—ऋ० ८।२०।२५-२६

अगर केहू कहे कि एह मंत्रन के रचना पंजाब में भइल त एह से अधिका पागलपनी के दोसर कवन बात होई। सिन्धु भा असिक्न्या का तट पर लिखाइल तबो कहात बा कि सिन्धु भा असिक्न्या, समुद्र भा परबत पर जहाँ दवा मिले ले आके ओह आतुर के द कि ओकर छिन्न भइल शरीर जूट जाव। आरे के डाक्टर भले ही कहे कि पटना ले चल जाइब बाकी पटने के आदमी कहे कि पटना ले चल जाइब त ई अचरज के बात होई।

एही जमीन पर श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी अपना प्रबन्धकाव्य 'कौशिकायन' के रचना कइले, जवना में उनका अथाह सफलता मिलल बा। भाषा में, भाव में, कथा-प्रसंग में, लय में, धुन में सब जगह ऊ पोंग गइल बाड़े। एह खातिर उनुका के जतना बधाई देल जाय कमे होई। हमार असीस बा कि जीअसु कविजी लाख बरिस। "भूखि अतने बा कि छोड़ित करुष रूखर भेस; आव एकर बढ़ित, चमकित-बरित दमगर देस", "रोप धान का बिरवा अस धरती ऊपर बेटी अइली; पोसि-पालि नइहर बीअड़ में ससुरा में रोपल गइली" "लिहले रहसु बस दूइ दिहले चारि आठ बनाइ के" (दू गो ले अइले आठ गो दे अइले, चार गो बेटा चार गो पतोह) कतना सुन्दर सूझ बा।

विश्वामित्र सत्तूखोर जनपद के रहनिहार रहन। आज जतना नेह से मुर्ग-मोसल्लम के दावत देल जाता ओह से कहीं अधिका नेह से विश्वामित्रजी रिगवेद के मण्डल ३ सूक्त ३३ में बेर-बेर इन्द्र के नेवतले बाड़े, प्रातः स्तवन में सोमपान खातिर ई कहके कि तोहरे खातिर दही मिलावल सत्तू तेआर कइले बानी, जइसे सत्तू कवनो अनमोल पदारथ होखे। मण्डल छवो में 'सक्तुमिव' आइल बा। जब के फरुहियो एह लोग के प्रिय आहार रहे। विद्यार्थीजी मिथिला के चूड़ा-दही के गुन गवले बाकी भोजपुर के प्रधान भोजन सतुआ के जिकिर ना कइले।

पटना
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, सं० २०३० वि०
२१ अगस्त १९७३ ई०

—रघुवंश नारायण सिंह
सम्पादक 'भोजपुरी'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हथजोरी

'कवना अभागा के राम ना भावसु ?' एह कहाउति के मोकाबिला नइखे। गूड़ का मुँहें मिसिरी अस एकर सवाद के पुरहर बखान केहू का करी ? अपना-अपना ढंग से जाने-बूझे-सूझे जोग जिनिस के मोल एके ना हो सके। बहस से ममिला फरिआवल जाला सही के, पर सोझ बात अझुरावलो जाले। 'भारत-भूँइ' के महिमा तह में पइसि के लखाले, ऊपरे-ऊपर अकासे चढ़ि के उधिअइला से ना। केहू एकरा के देश कहल त केहू उपमहादेश। हमरा आँखी सँउसे संसार लउकल एह में। चर-अचर, जिया-जन्तु, नीक-बाउर जे कुछ जल-थल के कहो सँउसे ब्रह्माण्ड में बा, ओकरा ओर पहिले-पहिल एहिजे के लोग ताकल। सृष्टि के मूल तत्त्व आगि के महातम वैदिक ऋषि लोग आँकल। आगि सगरे समाइल बा त 'अगिनि-पूत' 'राम' काहें एके ठहर बन्हाइल रहिते ? 'अग्निदेव' के अनेक नाँवन से गोहरावल गइल भलहीं बाकी कवनो से ऊ अरथ ना निकसल जवन 'राम' कहते मातर झलकल ! 'सर्वव्यापकता' का साथे 'सर्वप्रियता' के सम्मोहिनी 'राम' शब्द का उचार में उतरलि।

'राम' का जनम-करम के कहनी जग-जाहिर बा। सगुन-निरगुन बखानो कम नइखे। केहू मूल सेवल त केहू पतई पटावल। हमरा सभ से सरोकार बा, केहू के दूसीं त कइसे ? 'राम' सभ में समाइल बाड़े, कवनो ना कवनो नाता में बन्हाइल बाड़े। सभ के सनेही 'राम' के चरचा चलते रही, उनुका आचरन के एक से एक अरथ निकलते रही। कंठ-कंठ में पइसल 'राम' हमरो हियरा में हुलास भरले—ई हमार बड़हन भाग ! अनकर कहल सुनत-सुनत लगलीं अपनो मने आह-अँटकर लगावे। संस्कार-सुभाव के बात कहिके आपन कथ ऊपर राखल ना चाहबि, अनुशासन का आदति के आदर करबि। बहुत दिनन ले 'राम' के जोहत-जोहत हम 'राम' का पहिलका पवनिहार भिरी पहुँचलीं जिनिका गुन-गरोह का बारे में एने-ओने थोर-ढेरि सुनले रहीं सही के, बाकी जिनिकर मरम हमरा अपने आँखी उघारे के परल। जब उनुका से तनी नगिचाह चीन्हा-परिचे भइल त सेह अपनइती पवलीं जे का कहे के।

'बक्सर' हमरा गाँव (शाहपुरपट्टी) से बारह कोस बा—सोझ पछिम, एके पक्की सड़क प। एगो ऊ दिन रहे जब सँकराति आ सतुआनि नेहाए खातिर माई-बहिनी लोग अपना गोड़े हँ-हँ कहत-कहत में बारहो कोस नापि देसु। लवटि के घरे अइला प कतने दिन ले 'पँचकोस' तिरिथ के बतकही चले। राम जी का 'चरन' के छाप आ 'बिसवामीतर' के पथल के मूरति के हीक भर बखान होखे। 'बगसर'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखे के हमार लालसा लइकइयें से लागल रहे जे पूरा होखल ओनइस बरिस का उमिरि में बस से बलिया बरिआती जात खा।

बतबँवरि बेहिसाब बढ़े लागलि एह डरे बस करतानी। बगसर के महातम पुरान पोथिन में भरल बा। 'सिद्धाश्रम', 'व्याघ्रसर', 'वेदगर्भ' आ 'विश्वामित्र-धाम' के बहुते सोर रहे। हजारन-हजार रिसि-मुनि, देवी-देवता, खुद 'विष्णु' आ 'वामन' भा शंकर भगवान अइसन लोग जहाँ तप कइल आ सिद्धि पावल ओही ठहर के नाँव 'सिद्धाश्रम' परल। एकर बेजोड़ महिमा के उचार 'वराह पुराण' कइले बा—

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं भुजमुत्थाय कथ्यते
सिद्धाश्रमं समं तीर्थं न भूतो न भविष्यति।

गीति - गवनई का जवरे तुकबन्दी कतने कइलीं। एही बीचे केहू कहल जे 'प्रबन्ध-काव्य' होखे के चाहीं। 'भोजपुर' का इतिहास—पुरान में समाये के सवख रहला से हमरो मन लुबलुबाइल। जाये के त जइतीं अपना जवार के 'जगदीशपुर' बाकी जानत रहीं जे 'विप्र'जी, हरेन्द्र देव नारायण जी आ चन्द्रशेखर मिश्र जी अगतहीं हो आइल बानी सभे। कहलीं, हे मन, छोड़ऽ जगमगात वर्तमान के, धरऽ सतजुग-त्रेता ओर जात. झुलफुलात डहरि। 'काशी' से 'आमी' (अंबिका भवानी 'सती' के जनम-मरन-भूँइ) तक गइलीं; शिवि, दधीचि, परशुराम, विष्णु, भृगु, गौतम—अहिल्या केकरो भिरी हालाहाली ठेके के हियाव ना होखे। का करीं ? धावत-धूपत अपना 'राम' जी का गुरुदुअरा बाबा 'विश्वामित्र' का चरन के सरन में अइलीं। इहँवाँ हमरा कवनो किसिम के छान-पगहा ना लागल, सरपट कूदे-फाने खातिर लम-हर फयलाँव लउकल। पहुँचते मातर बरिसन से तपत-तँवात रोआँ-रोआँ के जुड़ाँव भइल। अब का पूछे के !

राजा गाधि के सपूत के 'विश्वरथ' से 'विश्वामित्र' भइला तक के वेद-पुराण में कहाइल हाल-समाचार कवो काल सुनले रहीं। 'ऋग्वेद' के सूक्त आ 'राम-चरित मानस' के चउपाई पढ़ला प आँखि खुललि। आगा-पाछा ढेरि दूरि ले तकलीं त बुझाइल जे नीक जबून कतनो केहू कहले होखे, हमरा मन में मोटा-मोटी वइठल रूप के रेप नइखे लागल। अपना कियास से जे पावल करीं ओकर पता पुरुखो लोग देले रहे—

समुद्रस्यहि पारोऽत्र लक्ष्यते च क्षितेरपि
तारकाणां मुनेस्तस्य न गुणानां द्विजोत्तमा
लक्ष्यते केनचित्पारो गाधेः पुत्रस्य धीमतः
क्षत्रियोऽपि द्विजत्वं यः संप्राप्तोद्विजोत्तमाः

(स्कन्दपुराण)

मतलब, समुद्र के धरती के आ जोन्हिनिओं के पार देखल जा सकेला बाकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हे द्विजोत्तम सभे ! एह संसार में ओह विश्वामित्र के गुनन के पार ना लउके जे क्षत्रिय से ब्राह्मण भइले हा।

तब सवाल उठल कि कइसे का कहाउ। भोजपुरी में अगते से दूगो प्रकाशित (कुँअर सिंह) आ एगो अप्रकाशित (वउध-लीला) महाकाव्य हमरा आगा रहे सही के, वाकी एह तीनों के नकल प कलम ना चलल। हमरा ठेठ सुभाव के मेठ बने के ना मन कइल। हरवाह-चरवाह कुछु सुने खातिर टुकू-टुकू तिकवत रहले। वस, लगलीं कहे,—कबो आपन वात, त कबो ओह लोगन के। भरमावे के गरज रहे ना एहसे वतकही सोझे भइल। भोजपुरी-भूँइ के ढेला-ढुकुर पर, घासि-पात तर ओज-माधुर्य ठकचल बा, केहू उटुकेरो त तनी। वेद-पुराण, गीता, रामचरित मानस, धर्मशास्त्र भा राजनीति-विज्ञान का जवरे कतने पध्य पवले होखवि जेहसे ठाढ़ वानी। अइसे त छोट मुँह से वड़ वात सुने के सावङ केकरा वा, तवो सीखे-सिखावे के हमार सवख सवदीना सुबहित रहो ईहे मनकामना राखीला।

आजु ले अपना गाँव-जवार से नेह-नाता निवाहत अइलीं हाँ—ओकर एह घरी के चाल-रहनि से हरकल रहलो प। जनम से जवानी तक लाख दाब तर रहलीं बाकी परिस्थिति जवरे अपना प्रकृति के ताल-मेल ना बइठा पवलीं। एगो आदर्श हमरा मन रूपी बिरवा के वरावर ऊपर खींचत आइल हा। नरम दलकी भा गरम रेत-पथल छोड़ि के आजु ले मन माफिक डहरि जेकर तरवा ना जानल ओह देहि के माथ कतना ले ऊँच अलगी ? हँ, केकरो कोरा-कान्हा चढ़े के, केहू के जाँति के ऊपर वढ़े के सवख ना रहला से चहलीं हाँ जे हमरा से अधिका लमहर एक ना अनेक होखसु, बाकी हमरा से नाट-खूँट केहू जनि होखे पावे। नवे त हमरा सङे-सङे हमार आउर भाई-वंधु अपना आँखी ऊ कुल्हि देखि पइहें जे हमरा लउकता।

हमनी का अपना कुवानि से हलुक वनल वानी जा, हें-हें-हें कइके उधिआत फिरत रहला से। आजु जब एने-ओने के लोग एक सुर से अपना भूत-वर्तमान का महिमा के बखान कइ रहल वा, भोजपुर के भकुआए के ना चाहीं। गौरव का नाँव प ओकरो लगे ऊ कुल्हि बा जेह से आन-आन ठहर के लोग अगराता। फरक बा त बस अतने जे आन जगहा अपना पुरनियाँ का नाँव के सुमिरिनी बनावल गइल बा आ हमनी कीहाँ अपना पुजनउग पुरुखन के किरती-कथा के कवनो खोजे-खबर नइखे। कवन क्षेत्र कतना सभ्य-संस्कृत बा, एकर पता चलेला उहाँ गवात पुरुखन के गुन-गौरव का गाथा से। हमरा जाने गाधि-पुत्र कौशिक 'विश्वरथ' हमनी के प्रातःस्मरणीय पुरुखा के नाँव ह जिनिकर पूजा मिरजापुर से सोनपुर तक गंगाजी के दूनो पाही पसरल क्षेत्र के 'भोज' गन कबो करत रहे। भोजपुरी भूँइ के भाग जगावत चलल ओही बावा विश्वामित्र के चरन-कमल के चरचा तुक में बान्हे के त चहलीं पर निबाहे के अवकाति अपना में नइखीं पावत। पहिले से कहात बड़हन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'राम-कथा' का बीचे कौशिक मुनि के छोटहन बखान के अपना जाने एह तरे बढ़ावल चाहत रहीं जेह में भोजपुरी भाषी क्षेत्र के बेजोड़ बुद्धि-बल के जगमगात सरूप आजु के चोन्हरो—आँखि अछइत आन्हरो—का आगा डिठार हो जाउ। ऊ जानो जे परंपरा के छान-बान्ह तूरि के आगा डेग डलनिहार, अपना सूझ-बूझ से संसार का उवार के राह जोहनिहार आ मानुस का काया में भगवान के छाया झलकवनिहार ऋषि कौशिक के भारतीय संस्कृति (जे कवो 'हिन्दू' संस्कृति का नाँव से जग-जाहिर रहे) के उजगार करे में कतहत हाथ रहल हा। हवन-कुंड का अगोरिया खातिर 'हवन-सपूत' के उतारल; अगिनदेवसे अधिका आगि आदिमी में पावल;आ फिनु ओह तेज के माटी में से उपरावल मूरति का जोड़-जुगुत जोति जवरे जोरल विश्वामित्र छोड़ि आन कवना रिसि-मुनि से सँपरल ? हँ-ना का तर्क-वितर्क में ना परि के अपना अनुभव का आँखि से 'नर' भेस में 'नारायण' के निरेखल युग-प्रवर्तनकारी काम रहे। एकरा बारे में समरथ गुनी लोग ढेरि कुछु बतइहन, हमरा त बस अतने आवता—

'कइसे करे बखान गूङ कवि
क्रान्ति राग का रस के
चहले विश्वामित्र तबे जग
जानल राम-सुजस के'

कइसहूँ 'क' से 'ह' खंड ले ३३ गो छोट-बड़ टाटी ठाढ़ कइ के 'कौशिकायन' के मंडप उठल हा—सगरे मात्रिक छंद के बान्ह बा, चाहीं त सोझे सोझ पढ़ीं, चाहीं मनगर तरज में गाईं-बजाईं। हँ, जे कुछु नीक लागे त जानल जाई जे ऊ एह माटी के महिमा ह, हमरा हाथ के हिकमत ना। एह प्रवन्ध-काव्य में भाषा भरसक अपना गाँव के—मध्य उत्तरी शाहाबाद (अब भोजपुर) जिला के—सहज ढंग से राखल चहलीं हाँ। मिठास खातिर दू गो अनतहूँ का शब्दन के मेरवन कइले बानीं—गाजीपुर के 'मतिन' आ गोरखपुर के 'मनई'। कतहूँ शब्दन के तत्सम रूप के हू-ब-हू हवेखत, कतो उन्हनी के हिज्जे के निहुरावत-पसरावत आ जीभि-कान का पलरा पर चढ़ावत-उतारत मात्रनि के हलुक-भारी करत अइलीं हाँ। 'बक्सर' के बगसर ना 'वघसर' आ 'करूष' के 'करुष' कुछु सोचिये के लिखाइल बा।

बे लूरि-ढंग के हमार एह पहिल प्रयास के जो कतो उपहासो होई त कतो सनेहो मिली। 'कौशिकायन' का ओरी तर धइल 'आपन कथ' में आग-पाछ बतावत पंच से हथजोरी बा।

चन्द्रायण,
शिवाजी पथ, यारपुर, पटना-१
गंगा दसहरा २०३० वि०; एतवार, १० जून, १९७३ ई०

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कौशिकायन

"यत्र दाता ग्रहीता च स्वयं कुशिकनन्दनः"

—भवभूति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी।
बसहिं बिपिन सुभ आस्रम जानी॥

जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं।
अति मारीच-सुबाहुहिं डरहीं॥

देखत जग्य निसाचर धावहिं।
करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं॥

गाधि तनय मन चिन्ता ब्यापी।
हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी॥

तब मुनिवर मन कीन्ह बिचारा।
प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा॥"

—रामचरित मानस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क

सुमिरीला पहिले पहिल मातु सुरसति के
बिसरे जनि कबहूँ चरन-कमल गनपति के

का कहीं हाल अपना उदबेगल मति के
ढोवत फिरलीं उछहल बहङी साँसति के

पपनी का भीतर पोसल माँह अन्हारा
लुतुकी चाहेले कब से बनल अङारा

गरजे-तड़पेले बिजुली मन में बसि के
बन्हले बानी आन्ही मूठी में कसि के

भीतर बा धन्हकत, बाहर भले धुआँ ना
ई अगिन सरापल खर्ह से कबो छुआ ना

पँजरा ना ठेकल जेकर केहू अब ले
सभ का कारन ऊ बाट बहारी कब ले ?

ताके ना एने-ओने अलख जगा के
देखेले सपना अँखिया नीनि भगा के

गर में लागल बा फाँस बोलि ना पावे
मुँहवाँ जाबल ई भेद खोलि ना पावे

बइठल अब ले जे घाव निछोही सहि के
हुमचत बा जाँतल जियरा अब रहि-रहि के

छानल बा भलहीं गोड़ चउकड़ी फानी
जाँतल बा कतनो हाथ दाब ना मानी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ख

"सुगबुगात बा बिहान, राति ना रही
झुलफुलात जोन्हिनि के पाँति ना रही

थथमल बा बन में जे पवन ऊ बही
भोर के सनेस पात-पात से कही

परस से बतास का खुली बन्हलि कली
गुनगुनात भँवरन के दल निकलि चली

सकदम का पहरा में साँस ना परी
जगरम ई सपना के बात ना करी

पहर हटी भदरा के, लगनवाँ तुली
बिछुरल चकवा-चकई अब मिलो-जुली

अधिका अब मुरुगा मुँहचोर ना बनी
नयना निहँसी ना, मन थोर ना बनी

नीनि टूटि रहलि गाँव के, जवार के
भाग जागि रहल खेत के, बधार के

बोलि रहल बा कुछ कन-कन अरार के
आजु बा लखात नया रंग धार के

अँदकल खोंता के पंछी चहकि उठल
अँटकल जे अगिनि धुँआ में, लहकि उठल

अंग-अंग हुलसत बा, गनगनात बा
आगम हमरा कुछ अजगुत जनात बा"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग

"जय-जय गंगा अवतारिनि
जय-जय मइया जग तारिनि

जय-जय गिरि-राज-कुँआरी
जय भोलानाथ-दुलारी

परबत से जोरत सागर
कइलू तं भूँइ उजागर

पत्थल से बालू रसगर
कइलू तूं माटी लसगर

धरती के धन्य बनवलू
गुन जल के जगत जनवलू

बसगिति के कबो उजरलू
खँड़हर अन-धन से भरलू

घर-बन के भले बुड़वलू
तन-मन के मातु जुड़वलू

हो तपिस जेठ के भारी
हो पूस-माघ के ठारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पवलीं सुख एह दुआरी
धइ के जल भरि अँकवारी
पुरुखन के नाँव-निसानी
किरिती के कथा-कहानी
बा अजर-अमर जस-पानी
जिनिगी भर जहाँ जवानी
जुग-जुग से देखत बानी
बदलल ना कबो रवानी
परखी जे चीन्ही-जानी
महिमा तहार ऊ मानी
ना आस आन देवन के
लालसा चरन-सेवन के
छोड़ीं ना घाट-किनारा
बा तहरे एक सहारा
होला सँकोच कुछ बोलत
बान्हल मन-गँठरी खोलत
रहलू तूँ सब कुछ जानत
भरमल हमार पहचानत
बानी हम कतने दिन से
चाहत उबरल रिसि-रिन से
रहलीं हाँ कबो गुमानी
बड़हन तप-बल - अभिमानी
जे जग में धूम मचावल
जे दोसर लोक रचावल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे राज-पाट सुख छोड़ल
जे हाथ कबो ना ओड़ल
जे अलगे लीक बनावल
जीअत के सरग फनावल
जे भेद-भाव ना मानल
आफति के धरम बखानल
जे खोलि रसायन-ताला
काढ़ल गुन भरल मसाला
जे खोलल बान्ह जनम के
राखल जे मोल करम के
जुग-धारा मोरि बहावल
तप से 'ब्रह्मर्षि' कहावल
सपनो में जग मानल डर
जगला पर काँपल थर-थर
जानल अन्हार निरसंसी
हम हईं तेज रबि-अंसी
चललीं घंटा घहरावत—
धरमी-धाजा फहरावत
अपना धुन के अनुरागी
नवही हम रहीं बिरागी
अनगिनित भेस हम धइलीं
अनजान देस हम गइलीं
पढ़लीं-गुनलीं हम कम ना
धवलीं, धइलीं हम दम ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिकरमा कतने कइलीं
बहुते हरान हम भइलीं
पूरुब-पच्छिम बा देखल
बा पंघति सभे निरेखल

अनघा बाड़े मुनि-ध्यानी
कम नइखन पंडित-ज्ञानी
बा गड़हा कतहूँ टीला
बा किसिम-किसिम के लीला

केहू बा धूरि उड़वले
केहू बा धुँआ उठवले
केहू बा सागर उबिछत
केहू बा अमरित उझिलत

केहू बा बड़ बिधुआइल
केहू अधिका अगराइल
कल-छल में लागल भोगी
मुकुती में पागल जोगी
आपन उबार सभ चाहे
ना अनकर पीरा थाहे

आन्हर गुरु, बहिरा चेला
मारत आहे पर ढेला
का जाने के का पावल ?
रस कवन गूङ का भावल ?

हम कइलीं ना कुछ लीहल
सरबस चाहीला दीहल

RajGurú Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन्हलीं हाँ बन में डेरा
तूरत राछछ के घेरा

वा इहाँ हमार बसेरा
बइरी तर जइसे केरा

बानी अब एही हठ पर
होई जय कहियो सठ पर

जाई निसाचरी बेरा
आई सभ्यता-सबेरा

× × ×

जगि के प्रताप ना जागत
नइखे उतपाती भागत

रहलू तूं पातक-हारिनि
अब बनऽ असुर-संहारिनि

हर-हर-हर बम-बम हर-हर
गूँजे सुर बन-बन घर-घर

'बघसर' में सेईं 'कासी'
दऽ दरस इहें अबिनासी ''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घ

ठाढ़ होइ सुरसरि का जल में
सिर नवाइ कइ बन्दन,
'कौशिक' कइले उदित देव के
हाथ जोरि अभिनन्दन

आँखि मूँदि के ध्यान घरी भर
इष्टदेव के धइले
फूल-पत्र - जल भरल कमंडल
आस्रम में ले अइले

अंग-बस्त्र के बदलि, लेपि के—
चनन सुचित जब भइले,
पात्र लेइ समिधा के
पँजरा हवन-कुंड का गइले

आगि आँखि में लहकि उठल,
धन्हकल बनडाढ़ा मन में
जग्य-ध्वंस फिनु भइल आजु,
चढ़ि गइल रोस पल-छन में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होस उड़ल देखत बेदी पर
रहे हाड़ बिटुराइल
काँपि उठल मुनि के तन
लाँघत रकत-माँस छितराइल

"बेरि-बेरि हम करीं साधना,
सिद्धि देति ना दरसन
होत रहल जुग-जुग से हमरा
राछछ जवरे घरसन

बेरि-बेरि हम धाजा आपन
कइल करीला गाड़ल
झोरि-झोरि पाके पलखत
चाहेला असुर उखाड़ल
हीत-मीत जेकर इहँवाँ ले
पीटि रहल बा डंका
लीलि 'करुष', 'काशी', 'कोशल' के
ली 'रावन' के 'लंका'

'गाधि'-पुत्र भइला का नाते
छत्री भले कहाईं
तीर हाथ से संन्यासी हो
कइसे आजु चलाईं ?

मंत्र-तंत्र से अबले जे कुछ
जवना देहे सँपरल
चाहत उहे सकेता परि अब
अनका हाथे फँफरल"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँव मोरि तब कुटी ओरि
चलले रिसि बहुत उदासल
खीसि-पीति से भरल पेट के
बिसरल रहे भुखासल

काँट-कूस पर कइले आसन
दया-दीठि के डासल
लोभ-लार पसरावत राछछ
चाहे आजु उड़ासल

अइले हा मुनि 'विश्वामित्र'
मनावत जहँवाँ मंगल
धइले बा अब भेस सतुर के
तपसी खातिर जंगल

बेरथ बा इहँवाँ बसि के
अब अधिका धुँई रमावल
धाङल जात लात से
अँकुरल बीआ जहाँ जमावल

निहँसल छोड़ि बइठि पदमासन
मुनि फिनु ध्यान लगवले
अगिनि जग्य के सूतल जब
मन के तब जोति जगवले

खोट हो रहल कहाँ कवन
अपना से, जानल चहले
आँखि मूँदि के परंपरा के
अब ना मानल चहले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धुँआँ जग्य के धरम-केतु हऽ
तनले रहले अवले
कबो पियासल होइ कुँआँ ना
खनले रहले अवले

जहाँ बान्ह लागल बिचार पर
मति के एक चलत ना
रहे मुँदाइल आँखि धूरि से
केहू रगरि मलत ना

अगिन-देवता रहसु ब्रह्म का
ऊपर पूजा पावत
बिघिन होत खा कबो रहसु ना
निअरा-पँजरा आवत

जिनिकर जान बँचावे खातिर
आँचि सहेले साधक
उनुकर डेग-डेग पर दुसमन
दइँत बनल बा बाधक

"ना-ना-ना अब कार ना चली
महटिआइ के अइसे
धा-धा के हम जोरत जाइबि
टूटल कबले ? कइसे ?

हमरा ना चाहीं सचहूँ अब
आगि हाथ के जोरल
लवना माड़ेले जे भउरि
उहे चाहेले खोरल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे तेज से अपने आप
बरत सगरे दिन-रतिया
हटे मेघ के डर, काँपे
थर-थर अन्हड़ के छतिया

करबि जोह ओही लुतुकी के
अब ना इहँवाँ बइसबि
उड़बि अकासे, धाइबि धरती पर,
पताल में पइसबि"

परत कान में सबद जनाइल
ठनले गजब परनवाँ
खुलत आँखि लागल फरके
मुनिबर के दहिन चरनवाँ

पढ़त मंत्र, अच्छत छिरिकत,
जल तनी आचमन कइके
बिसवत आदित देव के करत
बिदा-बन्दना नइके

पाछे तुलसी-चउरा पर
सँझवति के दीआ बरले
कुटिया खाली रहे, जाइ
जगमग अँजोर से भरले

आसन कुस के डासि भूँइ पर,
भइले जसहीं बइठत
लागल जइसे हो सितार के
खूँटी केहू अँइठत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जरल देहि रूखर दिन में
रतनार नयनवाँ निहँसल
चढ़ल राति के पहर अचानक
कँवल हिया के बिहँसल

'साम गान' के रहे बन्हाइल
तान जवन अब छूटल
कारन कवन बिहाग के पहर
राग भैरवी फूटल ?

गीति रहे मोहत मन,
'कौशिक' रहसु भाव में झूमत
लागल जइसे पपनी से
होखसु केहू के चूमत

उठि-उठि बइठत चकर देत
अब चले देहि भहराइल
सुधि-बुधि के पूछो जब रहसु
बिरागी मुनि अगराइल

हँससु कबो अपने ठठाइ के
लोर बहावसु कबहूँ
रहसु गूङ बनि कबो,
धधाके सोर मचावसु कबहूँ

थाकल जाङर-जोर, चोर अस
असकति गते समाइल
खोलत मातर आँखि, जम्हाई
गँव से एगो आइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोलल चाहति रहे चुचुहिया
रहलि राति जब थोरे
नीनि चढ़लि माथा पर रिसि का
झलकल सपना भोरे

ज़वन आगि के रहले 'कौशिक'
जगला में दुतुकरले
फन उठाइ के रहे नाग बनि
फोंइ-फोंइ फुफुकरले

नाचि-नाचि के, छड़पि-छड़पि के
ताके कबो थथमि के
घासि-पात तर सरकि-सरकि के
भागे कतो सहमि के

धावल उनुका ओर बनल
बिकराल काल मुँह बवले
'रोहित' का डँसला के बदला
बुझला अबकी पवले

भइल माथ घिरनई मतिन,
गोड़ो तर ना कुछु सूझे
सकफकाइ के हाँफि-हाँफि
लगले सपना में जूझे

गिरल जात रहले अन्हार में
लागल ठेस, सम्हरले
ज़गमगात पवले छछात,
के गजब गेस बा बरले ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सनसनात अन्हड़ निठाह
तबले कतहूँ से आइल
हनहनात पत्थल का जवरे
वन में मेघ समाइल

चरचराइ के गिरलि डाढ़ि
लागलि पतई उधिआये
थरथराइ के जिया-जंतु
पवले ना कतो पराये

तर पानी, ऊपर पानी
बा अगल-बगल में पानी
हर-हर मूसर का आगा
छाता केहू का तानी ?

परलय आजु पहुँचले बोलत
डूबे चलल अछय बट
पँवरत-पँवरत बाँहि पिराइल
लागी माटी अवघट

गड़-गड़-तड़-तड़ भइल जोर से
लउकल भक से टीला
आन्ही-बूनो का कोखी में
अजब दइब के लीला

रंग-बिरंगी रूप जोति के
देखत बहुत चिहइले
भाग मानि नयनन के
मन में अपने आप सिहइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दमकत कंचन का जवरे
लउकल मरकत मनि हरिअर
चमकत हीरा रहे माथ पर
बइठल जइसे मनिअर

'शेष नाग' का फन पर पवले
मुनि बिस्तार गगन के
ठाढ़ सामने रहे सुदिन
लेके सुतार त्रिभुवन के

भजन मनोहर सुर में लगले
'विश्वामित्र' सुनावे
उचरत काग कुटी पर तब ले
लागल नीनि भगावे

पलक उघरते सपना के
संसार बिलाइल छन में
झलक भोर के देत
किरिन के बान समाइल बन में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ङ

सपना के सुधि करत-करत
मुनिबर के अजगुत बुधि जागल
लउके ना पावल रहुए
कबहूँ जे अब सूझे लागल

अकसर बन में रहि के अबले
जोति जगावत जे अइले
'बघसर' में निसिचरी अतहतह
का मारे उबिआ गइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहते जात रहसु लउठन के
कतने दिन से कउँचावल
सँपरे ना 'ताड़िका' नटिन के
दुअरा जम्हु का पहुँचावल

जगि के अगिनि निझावल चाहत
आइल राछछ उतपाती
मुँह से फूँकि सके ना केहू
चाहीं ऊ दिअरा-बाती

करनी 'बिस्वामित्री' अचरज के
जग में के ना जानत ?
धरती के का बात ? गगन तक
बा जिनिकर लोहा मानत

कुछु दिन से छूवसु ना कवनो
रिधि-सिधि के अपना हाथे
गुनगर पगरी आपन बान्हल
चाहेले अनका माथे

बढ़ती होत सुजस के जो
सदगुन केहू देला-लेला
गुरु के भार हलुक हो जाला
पाके मन माफिक चेला

सिंह निअन रिसि धाजा तनले
बन में रमसु अकेला अब
भीर ना रहे, दल-बल के
सभ छूटल रहे झमेला जब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनि के हँसल रहे दुनियाँ
कहियो बोलल इरिही-बिरिही
अतना साँच, रहसु तपसी बनि
नइखसु अब 'कौशिक' गिरिही

कतहूँ केहू ना लउकल जे
करित कबो उनुकर पटतर
रहले देवराज काँपत
सोझा ताके ना कवनो नर

तीर-धनुस के गुन मुनि से
ना लेला मनई के बेटा
दूध धरे खातिर बाघिन के
चाहीं सोना के मेटा

पँजरा नइखन आपन जामल
होखत जोह तबे अनकर
सँउपे जोग अकिलि के थाती
लउकत ना केहू मनगर

अचके कुछु सुरुता पर चढ़ल
बिहँसि उठले 'कौशिक' मन में
चमके लागल तेज मनोहर
खीसी भूत भइल तन में

पूरा भइल मनोरथ रहे
अगिनि से बूढ़ अवधपति के
"पाईं आजु दवाई चलिके
उहँवें अपना दुरगति के"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फरकि उठलि अँखिया दहिनी
तब मुनि आगा खँड़लिच पवले
हुलसि उठलि छतिया, सुमिरत
केहू के मन ही मन नवले

लागल काहें दो 'कौशिक' के
भकसावन बन मनसायन
भाँसल अगते उनुके—'अइले
धरती पर नर-नारायन'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

च

अवध चलु मन ! अवध चलु, उठु, राह पर धरु पाँव
मगन होखत छोड़ बन अब पहुँचु अनते ठाँव

बास 'बघसर' के तनिक ना आजु लागे नीक
धाउ रे कोसलपुरी का ओर, मेटो हीक

आजु ले होखल अनेकन अजब अकसर कार
होसिला एके रहल अब एक खखन हमार

भूखि बा अतने कि छोड़ित 'करुष'१ रूखर भेस
आब एकर बढ़ित, चमकित-बरित दमगर देस

राछछन के ना रहे पाइत इहाँ लवलेस
तीर पर बसि बेद भनिते साधु-संत हमेस

दरस तरस हरित रहित ना सरस भूँइ उदास
बिमल गंगाजल जहाँ ना पाप ठेकित पास

देखि-सुनि नीके तरे हम कहबि गरज-उदेस
मोह में परि के कहल मनिहें कि ना अवधेस ?

●

१. कर्मनाशा आ सोन का बीचे पसरल भाग जे पुरान जुग में 'करुष' कहात रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छ

चमकलि सोन किरिनि जसहीं
चढ़ि ऊँच बँड़ेरी ऊपर
कइलसि कउआ 'काँव'
'कोसिला' का अङ्ना ओरी तर

टोकि उठलि लउँड़ी बिटिया
ना बूझलि बात अनाड़ी
"बोलु, बोलु, के आवत बा ?
कागा ! कुछु उचरु अगाड़ी

अइहें बबुआ के मामा
सचहूँ तब खीर खिआइबि
कहिके महरानी से सोना
ठोरो पर मढ़वाइबि"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गूँजि उठल पूजा-घर,
धुन गुन-गुन के गते सुनाइल
आङन का ओना-कोना में
गम-गम गमक समाइल

खरकल पट, भइली बाहर
कर जोरि 'कोसिला' माई
बिनवत आँखि मूँदि धइ आँचर—
"होखीं देव ! सहाई

रउरा छोहे बा भँड़ार में
अनघा हीरा-मोती
रउरे दया-दीठि से पवलसि
आन्हरि अँखिया जोती

राउर लहर चढ़वलीं माथे
हे अँजोर के सागर !
तेज-अंस देके आपन
राखीं रघुबंस उजागर"
.....

बतरस होत रहे राजा—
छोटी रानी का बोचे
दुगन-मगन चारो जवरे मिलि
रहलन खात नगीचे

साँवर एक, गोर दोसर,
बा मनि-कंचन के मूरति
आँटत नइखे नयनन में
दूनों जोड़न के सूरति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भले लइकपन बीति गइल
पाम्ही के रेख लखाइल
रहे सुभाव सोझ बचपन के
देखत मन अगराइल

भरत-राम में भेद कबो ना
जनली जेठी जानी
लखन-सत्रुघन के महतारी
गऊ सुमित्रा रानी

बखरा लहुरी-जेठ गोतिनी में
मँझिली फरिअवली
अपना एक लाल से अनकर
जोड़ा दूइ बनवली

सोझा राखि आँखि का हरदम
कइल करसु निगरानी
चारो लरिकन खातिर माई
एक 'केकई' ज्ञानी

खाइल-खेलल चाल-रहनि के
देखल करसु पसन से
पालल-पोसल सभ लरिकन के
चाहसु अपना मन से

भले देहि से नारी रहली,
काटसु कान मरद के
रही पिआरी राजा के, पर
राखसु तोपि दरद के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घरनी बनलि रहे हरिनी अस
आइ सिंहिनी बन के
परदा तर ऊ आजु परल
जे रहे सँघतिया रन के

राज-महल का सुख-सिङार में
इचिको ना रस पावे
चाल दइँत के चीन्हनिहारिनि
के बिहार ना भावे

मन में निहँसल करे बहुत
अब देखि बूढ़ 'दसरथ' के
रन में धुरा बनल जे रथ के
हाथ आजु बेहथ के

बढ़त आ रहल दखिन-खंड से
राछछ-दल, के रोकी ?
परल नीनि के पहरा सँउसे
उतर ओर, के टोकी ?

दूरि पछिम से दूरि पुरुब ले
कइलस जे सरदारी
जागल रहिके अब सुदेस के
करित 'अवध' रखवारी

बीर जवान रहे ना कुल में,
बेटो चारि दुलरुआ
सोचि, भवान होत रहली
बनि के 'केकई' पहरुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उतर खंड में कहिए से
बा तीरिथ 'अवध' कहावत
जगत जहाँ के सत्य, त्याग,
तप के महिमा बा गावत

सूरुज बंसी फूलन के बा
गमक आजु ले ताजा
दीन दुखी का कारन
भइले ठाढ़ जहाँ के राजा

गाइ चरावत फिरसु बने-बन,
छीनसु अनकर धन ना
तेजसु भले परान आन पर
तूरसु कबो परन ना

भार भूँइ के हरसु डालि के
आपन जान अफदरा
गार्ह-सकेता कामे आवसु
ना खहुआ-पनबदरा

जुग-जुग से अइले जे
बइठल-बइठल पूजा पावत
जनम-मरन से मतलब ना
रहले जे अमर कहावत

रोग-सोक के जिनिका ऊपर
परल कबो ना छाया
राग-भोग के भागी बनि
पसरावल कइले माया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाँव देव के भले रहे,
कर जोरसु रबि-अंसिन के
काम-धाम सँपरे ना कुछु
मुँह जोहसु मनु-बंसिन के

कइले रही कबो जिनिकर
उपकार 'केकई' भारी
गइले हुलसल, अइले ना
फिनु झाँके कबो दुआरी

लहबर का बीचे रहि के
जे बनल आजु अकसरुआ
'दसरथ' का चउथापन में
जनि होखे 'अवध' अबरुआ

रानी के ना फिकिर आन,
जे खटका बा से अतने
'हाली से लरिकन के खोलीं
भटका कवना बूरने ?'

खेलत खात जात र में
दिन चारो लल जरावत
डाँटत-डपटत ना केहू
जब रहे पढ़ाई घर के

गुन के आगर, सागर बिद्या के
बहुते सुख पावत
गुरु 'वशिष्ठ' कुल के उपरोहित
रहले पाठ पढ़ावत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रीति-नीति जे राज-बंस के
रहे नीक समुझावसु
बेद-सास्त्र के अझुराइल
झउरा गँव से सझुरावसु

तेजी अइसन रहे, बढ़त जा
सर-सर रोज पढ़ाई
पूछे का पहिले जबाब में
चउकस चारो भाई

जानत रहसु जनम से
लरिकन के लच्छन गुरु-ज्ञानी
पावल करसु 'राम' में
सभसे बढ़ि के एक निसानी

थथमसु ना कबहूँ अनका अस,
ना कबहूँ अकुताले
हँससु ठठाके राम ना कबो
ना कबहूँ अकुलाले

सुग-जुग से ारे ऊ ना
बइठलभने झाँकेले
जनम-मरन खो राह-बाट में
नीचे जे ताकेले

हाथ जोरि के पाठ सुनत खा
बइठसु ध्यान लगा के
पाँव निहारत उठसु कहे खातिर
कुछु माथ नवा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मरम बखानत कठिन बात के
कबो अइसनो लागे
अरथ निकासे में बाड़े
चेला गुरुओ से आगे

करसु ज्ञान देबे में ना गुरु
खोती अपना जाने
कहसु राम चीन्हल-जानल
सबदन के अजगुत माने

पोथी रहे हाथ में आगे
धनुस-बान पीठी पर
जानी रीति प्रीति के ना जे
डर से ऊ होई सर

शास्त्र-ज्ञान सङ अस्त्र-सस्त्र के
राखल बहुत जरूरी
बा पुरबिल से आवत, जाई
कबले ई मजबूरी

अन्हड़ उठलो पर अन्हार में
दिअरी चलल जरावत
राछछ हमलावर के तपसी
मनई रहल हरावत

दुरजन भल मन से ना चाहे
सोझ कबो बतिआवल
अनकर हक-मारन के चाहीं
मुसुक बान्हि लतिआवल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहिए से बा होत मनावन
तबो लगन ना जूटल
अबहीं ले हठुआर बानि
ना रकतसोख के छूटल

पसरावल बा बहुत जरूरी
जग में दया-धरम के
अपनावल चाहीं सभ के
जे बूझे बात मरम के....

सोचत रही मने मन ईहे
छोटी रानी मयगर
आइल दुअरा से हँकार
उठि धवले दसरथ दयगर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज

गह-गह कतेक दिन पर दरबार हो रहल
रिसि 'कौशिक' के स्वागत-सत्कार हो रहल
सरधा-भगति नरेस के लखार हो रहल
कठवति मङाइ पाँव के पखार हो रहल
झट ऊँच एक आसन तइयार हो रहल
पट मखमली डसाइ के सिङार हो रहल

टहकार आरती बारमबार हो रहल
मुँह खोलि महामुनि के जयकार हो रहल

अहगरत पावलगी नमस्कार हो रहल
रुचिगर असीस के मधुर उचार हो रहल
मुनि से सहमि-सहमि गते पुछार हो रहल—
"कहितीं, कवन बतुस के दरकार हो रहल"

"सँउसे सभा सुने, अरज हमार हो रहल
परि के बहुत सकेत मैं पुकार हो रहल

पहिले भइल कबो ना जे कार हो रहल
अइलीं इहाँ हटावे जे भार हो रहल

छवले रहीं कुटी जे, जरिछार हो रहल
धरमी हमार धाजा जनमार हो रहल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कतना कहीं जवाल बेसम्हार हो रहल
लुचुटाह रहे निसिचर, खूँखार हो रहल"

"राउर हुकुम हमार बड़ दुलार हो रहल
हाजिर भँड़ार, पलटन, हथियार हो रहल"

मन के सवाद मुनिबर के खार हो रहल
हँसले हिलाइ के सिर, इनकार हो रहल

दिहले बताइ,—"ई कुल्हि बेकार हो रहल
परदा गुपुत बिचार के उघार हो रहल

ललकार आजु जतने टनकार हो रहल
ततने दइँत-समाज होसियार हो रहल"

तब गुरु 'वशिष्ठ' अइले, सभ ठाढ़ हो रहल
अँकवार भेंट 'कौशिक' से गाढ़ हो रहल

गुरु का मुँहें कुमार के चिन्हार हो रहल
धइ माथ पाँव पर सिस्टाचार हो रहल

मुनि बिहँसि मने-मन कहसु 'सुतार हो रहल
मनवाँ भरल हमार अब उबार हो रहल'

कुछु बात भइल गँव से, अतिबार हो रहल
मुँह सूखि गइल, आँखि तर अन्हार हो रहल

कर जोरि चकरबरती अलचार हो रहल
परबस इहाँ अवध के सरकार हो रहल

धरमातमा कहाइ गुनहगार हो रहल
अवधेस का हियाव के हँसार हो रहल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झ

दिन बीतल सोच-फिकिर में राजा दसरथ के
रनिवासे आइ जनवले कौशिक का कथ के
सबसे पहिले ई छँवक सुमित्रा का लागल
जइसे धिकाइ लोहा करेज केहू दागल
कठमुरुकी लागल रहे कोसिला के सुनि के
चुपचाप रहल ना जात केकई से गुनि के
पछतात रहसु राजा बहुते सिर धुनि-धुनि के
उनुका नजरी ई लउके नाहक हठ मुनि के
अइसन ना केहू जे मुनिबर के समुझाइत
निकसल मुँह से उनुका बतिया के लवटाइत
लरिका दसरथ पवले हा चारि बुढ़ारी में
डलिहें कइसे उन्हनीं के मारा-मारी में
बाड़े नयनन का पुतरी अस सत्रुघन-भरत
हीरा-मोती अस बाड़े लछुमन-राम बरत
लीहल चाहेले मुनि उनुका ओही मनि के
जीअल चहिहें ना जिनिका बिनु आन्हर बनि के
आवे ना निअरा नीनि, राति बहुते बीतल
पावे ना लहरत जिअरा बोध तनी सीतल
पँइजनी सुनाइल, छोटी रानी आ गइली
चाननी निअन केकई आँखि पर छा गइली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजा के हई सलहिया बड़ छोटी रानी
बोलेली बात मरम के, हई परम ज्ञानी
अइला पर जिनिका के पँजरा बइठा लिहले
उनुके माथे सभ आपन बोझ चढ़ा दिहले
राजा के दसा देखि के रानी मुसुकइली
माथा के बाथा रहे तबो ना अकुतइली
मङले मुनि राम-लखन के ऊ जानत रहली
बहुते नीमन ई बात रहे मानत रहली
रनधीर बनावल चाहत रही दुलरुअन के
बनबीर बनावल चाहत रही नगरुअन के
हँसि-हँसि के मन बहलावे लगली राजा के
मतलब गँव से समुझावे लगली राजा के—
"बड़ भाग मनाईं दुअरा रिसि कौशिक अइले
सचहूँ सभ पितर अवध पर आजु सहूँ भइले
चिन्ता हमार मेटल, रहि पाई ना अब डर
भइले सहाइ हमनी के बहुते बिधि—हरि-हर
के बा उनुका अस मरमी तीर-धनुस-रथ के
जानेला जगत करावल, कइल, 'विश्वरथ' के
उजिअइहें ना घर में बन्हला से सेर-बबर
बनि पइहें ना गोदी में लरिका कबो निडर
चाहीं रहबट सभ ओर माँह मैदाना अब
कूदे फानें दीं, बनसु वीर-मरदाना अब
बाम्हन-सराप से जो चाहीं अपने छूटल
आइल बा सुदिन, सराहे जोग लगन जूटल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाड़न जे काँच-कुँआर रमे दीं तिनिका के
चाहसु मुनि जगि-रखवार बनावल जिनिका के
तनिको संका जनि करीं, महा मंगल होई
मनसायन मुनि का लगे घोर जंगल होई
कुछ सूझल अचके, ठाढ़ होत राजा कहले—
(परि के अह-जह में जे अवले बूड़त रहले)
"लउकत ना रहे अन्हारा, दिहलू राह बता
पँवरल ना जात रहे, तू दिहलू थाह बता
रहलीं जानत तूहीं पत-पानी राखेलू
मनली होई ऊ साँच जवन तू भाखेलू
कुल-गुरु के दरसन करबि होत भोरे जाके
मुनि बर के खबर जनाइबि उनुका सङ आके
दूनों बहिनिनि के समुझइहऽ तू नीक तरे
जालन मुनि जवरे राम-लखन सुभ काज करे
....
कहि के सुमंत से फरहर रथ मङवा लीहऽ
सरजाम सोचि के अपना से धरवा दीहऽ"
अब रहे खटक ना तबहूँ मनवाँ ना माने
कब गते समाइलि नीनि नयनवाँ ना जाने
कर फेरत खा सुनले राजा मुरुगा बोलल
परदा कुछ हिलल, पवन जब दखिनहवा डोलल
बा फरिछ होत बहरा, बुझात बा पह फाटल
झाँकत खिरिकी से झलकल लोही के पाटल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ञ

चलल जा रहल बा, चलल जा रहल बा
डगर पर हराहर बढ़ल जा रहल बा
कहाँ जा रहल ना कहल जा रहल बा
हवा होइ के रथ बहल जा रहल बा
चले सोझ, कबहूँ मुड़ल जा रहल बा
गड़े भूँइ में ना, उड़ल जा रहल बा
पताका कतो तर परल जा रहल बा
कबो टाप ऊँचा चढ़ल जा रहल बा
इहे आ रहल बा, उहे जा रहल बा
बटोही खड़ा ताकि मुँह बा रहल बा
कहे लोग 'भागल डरे जा रहल बा'
कहे लोग 'लवटल घरे आ रहल बा'
कतो पार पानी करत जा रहल बा
कतो राह कुटकुर धरत जा रहल बा
जहाँ सोझ पहिया परत जा रहल बा
तहाँ पाँक-लाथरि झरत जा रहल बा
किरिनि ना रहलि अब कुहा छा रहल बा
गइल आगि जोरल, धुँआ छा रहल बा
लुतुकिया मतिन रथ बरत जा रहल बा
अन्हरिया नयन के हरत जा रहल बा
सरगवा पुरुब ओर पिअरा रहल बा
भइल भोर 'उजिआर' निअरा रहल बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ट

रथ ठाढ़ हो गइल अब दरिआव भिरी आके
मुनि, राम, लखन धइलन तब पाँव सिर नवा के

जानत रहन डहर ना दूनों कुँअर इहाँ के
आइल रहन कबो ना, ताकसु चिहा-चिहा के

उतरात लाल चक्का बा पछिम ओर जा के
बुझला भइल भुलवना जल दखिन ओर पा के

लगले हँसे महामुनि कहले गते बता के
"सुरुता चढ़लि उहाँ के, 'सरजू' उतर दिसा के"

कहले पुरान कहनी रुचिगर तनी बना के
पुरुखा सगर, भगीरथ के गुन गना-गना के—

"अँटकल कपार पर जे बनि भार 'शिव'-जटा के
हुमचल करे हिमालय पर धार छटपटा के

अनले पहाड़ खनि-खनि, जंगल हटा-हटा के
कइले किनार रसगर रेती पटा-पटा के

जे देव लोक खातिर राखल रहे बरा के
बा ऊँच भूँइ से ऊ नीचे चलल खरा के

राखे दरस इहाँ के सभ पाप के भगा के
जाला सभे जुड़ाके बुड़ुकी लगा-लगा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पावल करे मनोरथ मन के मइल बहा के
गावल करे सुजस जग गंगा नहा-नहा के"

मुनि फिनु तनी बतावे लगले रहनि तहाँ के
पहुँचल रहसु अवध में उदबेग से जहाँ के

दखिनाह होइ कहले अङ्गुरी उठा-उठा के
बनबास में करत जगि उतपात 'ताड़िका' के—

"मारीच' नीच भागे बहुते सता-सता के

चाहे 'सुबाहु' निसिचर ना भोर सभ्यता के
सोखे रकत रिसिन के कुँइयाँ गहिड़ भठा के
सोना ठगे जगत के 'रावन' हँसत ठठा के
दिन में अलोत जा के राछछ रहे लुका के
भरभठ करे तपोबन जगि-सार थुकथुका के
अइलीं सहत इहाँ हम अघ बहुत गर भुका के
बरलीं जवन दिअरिया बा जरत भुकभुका के
अपना मुहें कहीं का हम के हईं, कहाँ के
हम तीर छू सकीं ना ई चीर अब रङा के
इतिहास में जगत के करनी रही लिखा के
अपने रहबि अलोता हम दाव सभ सिखा के"

.....

गंगा नहाइ लवटल रथवाह जब उहाँ के
दिहले असीस 'कौशिक' मंगल मना-मना के
लिहले मङाइ घटहा बँहियाँ बढ़ा-बढ़ाके
चढ़ले लखन पहिलहीं, मुनि राम के चढ़ा के

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठ

नाइ खुलत भर देर रहे सर-सर-सर बीतल पाट
आइ गइल घसकल अघहर 'बघसर' के कुटकुर आट
मुनिबर अगहर होइ उतरले, लछुमन-राम पछात
मनगर रहसु अवध से लवटल ले के लगन छछात
डेग बढ़ल धरती पर फरहर धइ पछिमाहुत राह
राज-कुँअर सङ दहिने-बाँयें घूमत भरल उछाह
लागल पल-छन, निअराइल बन, लउकल कँटगर बाट
भागल हरख, समाइल करख, निहारत उजरल ठाट
तूरि-फारि जगि-सार पराइल रहे निसाचार राड़
छीटी-छाटि सरजाम हवन के रहे बिछवले हाड़
भँहूँ-नाक फर-फर-फर फरकल, भइल नयनवाँ लाल
छन में बनल गोर लछुमन के तमड़ा रङ के गाल
'मेघबरन' के बँहियाँ लमहरि खोजे लागलि तीर
देखत दुरगति मुनि के भइलन रघुबर बहुत अधीर
कहिते का कौशिक अधिका कुछु, सोझा रहे अनेति
असहीं देला पलखत पा के राछछ गरदनि रेति
झलकल जटा-जूट दार्ही का बीचे दू गो बून
खउलल रिसि के दसा देखि तब रघुबंसिन के खून
आगे बढ़ि अपना पटुका से पोंछत मुनि के लोर
ताके लगले रामचन्द्र घन बन में चारो ओर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ड

तीर-धनुही चलावे सिखावे लगले
बोलि मंतर अछरिया लिखावे लगले
ठाढ़ होके अङुरिया उठावे लगले
'बाझ बइठल उहाँ बा' बतावे लगले
कबो भुँइयाँ चिरुकिया झुकावे लगले
ठेहुनन में कबो गर ढुकावे लगले
आजु ऊँचा चउकड़ी फनावे लगले
डेग के काल्हु लमहर बनावे लगले
दूध से मुनि अखाड़ा पटावे लगले
भार आपन फिकिर के हटावे लगले
दाव जानत रहसु जे बतावे लगले
जोर पाहुँच धराइ अजमावे लगले
बान-बिद्या पसन से पढ़ावे लगले
सान फर पर जतन से चढ़ावे लगले
राम में ध्यान कौशिक लगावे लगले
तेज सूतल लखन के जगावे लगले
भोर में रिसि 'ऋचा' गुनगुनावे लगले
साँझि खा 'साम' के धुन सुनावे लगले
जीव के तब जरनियाँ जुड़ावे लगले
आगि के जब लहरिया उड़ावे लगले

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढ

आजु बहुत दिन पर बन भीतर
गम-गम गमक समाइल
आँचि हवन के धन्हकलि नीचे
ऊपर धुँआ लखाइल

टन-टन धुन घंटा के गूँजल,
राछछ बहुत चिहाइल
"सनकल बा बुभला बुढ़वा फिनु,
ओकर दिन निअराइल"

कहलसि हा 'मारीच' आइके
माई से अकुताइल—
"दरिहअल जवरे साँवर-गोर
निमोछी दूगो आइल"

जगि के सोर सुनत 'सुबाहु' बा
मन में बड़ भकुआइल
निसिचर-दल कल-छल में माहिर
दिन में बा सकुचाइल

गरजि उठलि 'ताड़िका' लेइ के
बल हजार हाथी के—
"रन-बन में तकलीं हाँ ना हम
मुँह कवनो साथी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा छोड़ि 'करुष' में डँकरत
साँढ़ आजु नाथी के ?
भसम होइ जइहें अबकी रिसि
फूँकबि अस भाँथी के

बइठल बा 'अगस्त' मुँहझँउसा
मुँहवाँ कतो लुका के
असल हईं जामल 'सुकेतु' के
बदला रहबि चुका के

'विन्ध्याचल' के बाढ़ि रोकि के
भागल गइल छका के
बनल बवंडर जोहत फिरलीं,
मरलसि जान थका के

जरल भाग लहलह हमार
ओकर घनघोर सरापे
उमिरि काँच में फूटि गइल हा
चूरी जेकर जापे

बनवाँ खेत 'गाधि' के ना
जे अइले कौशिक नापे
बसगिति आपन जारि देबि ना
उनुका के हम तापे"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ण

खर-खर खरकल खरई बन के
आन्ही अइसन उठल हहास
नाँव ना रहे कतो गरम के
नइखे डोलत तनी बतास

चरचरात बा डाढ़ि गँछ के
अन्हड़ बुझला आइल पास
गड़-गड़ तड़-तड़ होखे लागल
बिनु बदरी के माँह अकास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गिरलि कड़ाकड़ बिजुली कतहूँ
आजु रहल बरखो ना दूरि
गजब रंग बा भइल सरग के,
चढ़ल जात बा गरदा धूरि
काँव-काँव कइके बकुलन सङ
गइले कउओ गंगा पार
हाँउ-हाँउ भा हुँआँ-हुँआँ ना
कइ पवले हा कुकुर-सिआर

अररात-भहरात जा रहल
बा कतने फेंड़न के पाँति
चरचरात बा बँसवारी, देला
गिरि के बर-पीपर जाँति
बरखा ना जल के ई सचहूँ
बरिसत बा ऊपर से आगि
बनडाढ़ा से जान बँचावे
चलले जिया-जंतु सभ भागि
धइके ध्यान तनी जनले हा
कौशिक ई केकर करतूत—
"अब का होई कुछ कहात ना
खीसी भइलि 'ताड़िका' भूत

अबले ना दिन में कहियो जे
हालाहाली भइल लखार
अबकी का जाने काहें दो
कइलस राछछ सोझे वार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना मानल जाई कउँचावल,
ई ना कवनो हँसी—मजाक
ई ना बिघिन जग्य-पूजा के,
ई ना हवे जमावल धाक
ई आखिरी जूझ होखे
चाहत बा सभ्य-असभ्यन बीच
बेरा निअराइल बा, भइले
पँखिगर चिंउटा-माटा नीच
चाहत बाझ झपट्टा मारल,
जानत बा हम हईं बटेर
ठानत बा उरुआ अन्हार के
लाल किरिन का जवरे रेर
हाँफि रहल बा, हहुआइल बा
देखि-देखि के होत सबेर
चोर आजु बड़ जहुआइल बा
चारो ओर पाइ के घेर
नागिनि फोंइ-फोंइ फुफकरलसि
आजु छोड़ि करइत के बीलि
टूटि परलि अब हमरा ऊपर
जाई बुझला लगले लीलि
तनिको असर भइल ना अबले
कतने गइलि चबाइ सराप
बड़का गो चखान ले दउरलि
हमरा ओर बाप रे बाप !"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम-लखन बाड़न कहवाँ ?
मुनि धावल जाके कइलन जोह
राज-कुँअर के बन में नाहक
ले अइला के लागल मोह

छन में लउकल आवत रहलन
आगा लछुमन, पाछा राम
उनुको रहे अचंभा बहुते
देखि छने-छन बदरी-घाम

जानत ना रहलन रघुबंसी
पहिले से का होखे जात
काँपत पंजरा आइ जनवले
कौशिक राछछ के उतपात

तवले करिआ बादरि अइसन
गइलि 'ताड़िका' झलकि हठात
चमकावति अङार अँखियनि में
लउकलि जइसे काल छछात

गरजलि अचके में बिजुली अस
मुनि का माथा ऊपर फानि
अहजह लागल तनी राम के,
चटकल बीर लखन के चानि

जाके अब ले रहे लुकाइलि
कवनो खोहे खनि के मानि
ढाही मारे धावलि धइ
मरखाही राँड़ि साँढ़ के बानि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठमकि गइलि तनिका भर, लागलि
देखे का दो अँखिया फारि
कइ दिहलसि अन्हार, मुँह पर से
बाँवाँ हाथे झोंटा झारि

हँसलि ठठाके पाके मुनि का
आगा-पाछा लइका छोट
पहिल झोंक में ना कइ पवलसि
कौशिक ऊपर कसि के चोट

"अङुरी धरत-धरत आइल
चाहेलऽ घसकल पाहुँच ओर
हमनी के जरि में भिराइ के
आरी काटत थोरे-थोर

बन का बाहर से अइलऽ हा
पहिले कइके गंगा पार
अपने रहत अकेले मन ना
लागल, ले अइलऽ परिवार ?

बूझि रहल बानी नीके
चाहेलऽ इहँवें कइल बसेर
हाथ-गोड़ पसरावे खातिर
अबले बन्हलऽ ढँढ़नच ढेर

घाट धरऽ अबहूँ से जाके,
सोझ मने जो बूझऽ बात
ठाढ़ रहे ना देबि पलो भर
भागऽ ना तऽ खइबऽ लात"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहत-कहत में गरजे लागलि
बोलति गइलि अनाप-सनाप
चढ़ल कपारे बुझला ओकर
सभ दिन के बिटुराइल पाप

फिनु विकराल लाल मुँह बवले
बनलि बान्ह के टूटल बाढ़ि
पट से तूरि गाँछ कवनो
झपटलि लेले झटहा अस डाढ़ि

उतरलि सोझ माथ पर मुनि का
देबें चललि निछोही घाव
तरकस धनुहा रहे पीठि पर
झट से लखन लगवले दाव

अलललाति भहराइलि छाती
धइले-धइले सोझ उतान
ढहलि ढिमिलिआ खाति 'ताड़िका'
लागल रहे 'राम' के बान....

भइलि साँझि, आ गइलि राति
लागलि ना मुनि का आँखी नीनि
जवरइलन ना ओह राति खा
निसिचर बनवाँ में के तीनि

रहन तीनि के तीनि पहरुआ
जागल जगि-मंडप का ओर
चह-चह भइल कतो खोंता में,
पवलसि चिरई नवतुन भोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बानि रहे अगते से, जाके
बिहने कइले गाङ नहान
मेटल ना हुटहुट मन के
मुनि कतनो कइले पूजा-ध्यान

भइल हड़ाहड़ गजब पड़ापड़
धावा लागि जमि के मारि
राछछ गोल बान्हि के आइल
रहे निठाह करे तकरारि

थथमत नइखे बीर लखन के
धनुस-बान पर फरहर हाथ
गिरल जात बा दुसमन-दल के
छप-छप बाँहि खटाखट माथ

बाड़े भले देहि में भँइसा,
चलसु अखाड़त आन्हर घोड़
जाङर लमहर पवलो पर ना
कइ पवले लइकन के जोड़

पूत ताड़िका के रहले बड़
चेल्हिक राछछ-दल का बीच
ठेकत कहीं बान बे फरके
भूत निअन भगले 'मारीच'

रहे बहुत बरिआर बाँहि के
जे निसिचर गन के सरदार
करे सामना आइल धावल,
लेइ 'सुबाहु' जवान जुझार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगिनि-बान लब राम चलवले
लागल जाके माँह लिलार
गिरल लुआठी अस राछछ का
पुँजउर ऊपर जरत अङार

अपना धनुही से छन भर में
धन्हका दिहले 'लछुमन' आगि
जरले पट-पटाइ के राछछ
हाड़ा अस, ना पवले भागि

भागल रहे आजु अँखियनि के
कतने दिन से भरल अन्हार
कंठ खोलि के कौशिक कइले
राम-लखन के जय-जयकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त

आजु मंडप बा बहुत बड़का बनल जगि-सार के
बा महातम भइल अजगुत आजु एह दुआर के

सोर सुनि के दूरि से निसिचर-गरोह सँघार के
लोग निकसल दरस खातिर राम अस रखवार के

रंग चढ़ि-बढ़ि के लखाला आजु बन गुलजार के
राति-दिन में ना फरक अब डर हटल बटमार के

पहुँचलन रिसि लोग कतने गाङ-सरजू पार के
हुलस बा 'दर्दर', 'भिरुग' आ 'चवन' का परिवार के

काँट-कुस के गमि तनिक ना राह जंगल-झार के
पाँव पवलसि पाँखि हुलसल जग्य-देखनिहार के

भाग जागल घाट के बा लगन लागल धार के
लेत उतराई सुनाला आजु ना घटवार के

माथ पर बोझा उठवले, कान्ह पर धइ भार के
हाथ में कुछु ले सभे जाला भरे भंडार के

कार अजगुत भइल विश्वामित्र मुनि सरदार के
भोर ना डाली कबो उपकार लोग जवार के
राम-लछुमन के कहे रच्छक सभे संसार के
पाँव पूजे जोग बा 'नरसिंघ' रूप लखार के

नाँव भर 'बघसर', रहल ना जगह आजु सिकार के
'रामरेखा घाट' के बा पाँक चनन लिलार के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थ

रूप विश्वामित्र रिसि नीके निहारसु आगि के
मंत्र मनहर छंद में कौशिक उचारसु आगि के

घीव-बोथल राग में अस्तुति सुनावसु आगि के
जीव-जाङर के अलम एके बतावसु आगि के

हाथ से कुस डासि के आसन सजावसु आगि के
नाँव 'वैश्वानर' कहत रिसि सिर नवावसु आगि के

भूँइ से आकास ले पइसार मानसु आगि के
आँखि का आगा उजागर देव जानसु आगि के

धार में जल के, पवन में बेग झाँकसु आगि के
चेतनउग बिचार में मुनि तेज ताकसु आगि के

जात ऊँच चढ़ल हवन-सङ तन निरेखसु आगि के
राति-दिन के साथ मन मुसुकात देखसु आगि के

पूजि के आपन सँघतिया तक बनावसु आगि के
काठ के जामल भले, मयगर जनावसु आगि के

साँझि में पसु के चतुर रखवार राखसु आगि के
भोर में चिरईं-चुरुङ के बाक भाखसु आगि के

सोचि मन में रंग-ढंग अनेक पावसु आगि के
खोलि आपन कंठ मुनि गुन खूब गावसु आगि के

जोति के देखत जनम थपरी बजावसु आगि के
'सूक्त' में 'ऋग्वेद' के रिसि कवि कहावसु आगि के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६

साँझि पहर रिसि जग्य-देवता
के आरती सँवरले
राम-लखन के मुँह मुँधार खा
कौशिक गँवें निहरले

रहले कंठ खोलि जतना
गुन अगिन देव के गवले
कम ना तनिको तेज-रूप में
राम-लखन के पवले

जग्यदेव का आगा जाइ
महामुनि माथ नववले
भाग सराहत मन ही मन
तब पाछा हाथ बढ़वले

ठाढ़ रहन जा पँजरे रिसि के
रच्छक दूनों भाई
जंगल में रहले मुनिबर बनि
जिनिकर बाबू-माई

राज-महल से अपना कारन
जिनिका के ले अइले
ठार-तपिस जनि लागे तिनिका
कार तवन ना कइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे उनुकर बरिसन के डर
पल-छन मातर में हरले
राछछ बड़ मरखाह करुष के
मुअले जिनिका मरले

कतने दिन से सूतल जगि के
जे फिनु आगि जगवले
रघुबंसिन के पारा पारी
कौशिक गरे लगवले

हाथ जोरि के, आँखि मूदि के
मनता कवनो मनले
बात पसनगर मुनिबर सबसे
अगते कवनो गनले

दहिनी अँखिया फरकलि फर-फर
भइल सगुन सुभ जनले
कुटिया में अइले सुनि के
बा चीठी केहू अनले

मुसुकइले पढ़ि के मन ही मन
फिनु गम्हीर कुछु बनले
रघुबंसिन से कहले मुनि—
के धनुस-जग्य बा ठनले

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे आजु बनफूल अधिक
सभ दिन से गम-गम गमकत
रहे चान कातिक दसिमी के
चम-चम-चम-चम चमकत
आधा नयन खुलल रिसि के
बा आधा पलक मुँदाइल
आगा होइ ठाढ़ रुचिगर
सपना एगो मुसुकाइल

मगन होत मनही मन पवले
मुनि कवनो अजगत रस
'जनक राज' के पाती लउकत
रहे लगन - पतिरी अस

"टूटी महादेव के धनुहा
भार तबहिएँ उतरी"
बेटी के 'बिदेह' लिखले
रहले धरती के पुतरी

लागल मुनि के ई सुनि
होखे उनुके माथे बोझा
आवत रहे डरे ना निनियाँ
ऊजुग रिसि का सोझा

रहले गनत-गुँथत कौशिक
मन ही मन जइसे-तइसे
"मिथिला' का माटी से साटीं
अगिनि 'अवध' के कइसे ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध

ठानल जगि के बेड़ा पार
भइल बा राम-लखन हाथे
ले जाइल चाहसु उनुको के
मुनिबर अब अपना साथे

जतरा बहुत दूरि के बा
नइखे पँजरा हाथी, हय-दल
अपना खातिर फिकिर ना रहल,
रनि दिहिते कौशिक पयदल

भइल सोच बड़, राजकुँअर के
कवनो जतने ले जइते
धनुस-जग्य के मरम लखा के
उनुका के घर लवटइते

अह-जह गुरु के देखि
पाँव दाबत खा राम-लखन कहले–
'टहरत-टहरत बढ़ि चलितीं जा'
बोलत मुनि के मन थहले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिलल उहे जे चाहत रहले
रिसि, सुनि के अगरा गइले
निकसि कुटी से का-का दो
सोचत मुनि फिनु बहरा अइले

दिहले भार सँउपि 'सिद्धाश्रम' के
कवनो बिसवासी पर
रहले अब चरित्र-बन में
अनघा बनाइ संन्यासी धर

होत बिहान साथ कौशिक के
साधु-संत कुछु धइ लिहले
राज कुँअर तपसी का पाछा
लागल बिहँसत चलि दिहले

रमत-झमत सभका जवरे
आगे बढ़ले जाँचत-बूझत
अनगँइयाँ दूनों कुँअरन के
बा मनगर जल-थल सूझत

रहे राह से कुछु हटि के
बड़हन एगो सागर झलकत
तनी जुड़ाइत सभे उहें
चलिके, बा उनुकर मन ललकत

मुनि जानत रहले पहिले से
चरन राम के बा अघहर
डलले तिरिछे डेग सोचि कुछु,
मनले ना बरिजल अनकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे आसरम नीक एक पर
नाँव ना रहे मनई के
जिया-जंतु दोसर के पूछो,
दरस ना कतो चिरई के

खरकत घासि-पात तक ना
बुझला बतास ना जात तहाँ
बरिस कतेक भइल सराप सहि
करसु 'अहिल्या' बास जहाँ

लोग-बाग के आँखि बचाके
रहसु लुकाइल बेचारी
काठ-पथल के देहि बना के
टकससु ना लाजे भारी

जगि के सोर सुनत रहली
मन में ऊहो बड़ अगराइल
चहली बहुत, उठे ना पवली,
रहली अइसन भहराइल

हाल चाल उनुका बीपति के
जग में पूछित-जाँचित के ?
'गौतम' अस पति के तेजल
नारी के किसमति बाँचित के ?

जुग-परंपरा तूरि पराछित
का पँजरा पहुँचाइत के ?
मुनि कौशिक के छोड़ि राम—
लछुमन का जवरे आइत के ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत सँकोची रामचन्द्र से
ई करनी करवाइत के ?
मुअत देहि से हहुआइल उठि
आजु चरन धरवाइत के ?

रहि के सहत कलेस बहुत
घन बन में दीआ जे बारल
उसुकावत अपना बिचार से
पाप-पलंजर जे टारल

"धन्य-धन्य मुनि ! आजु उंतरलीं
हमरा अङना रूप बिमल
पाँक लाँघि के ले अइली हाँ
रामचन्द्र के चरन-कमल

गुन गावे रोआँ-रोआँ
दिहलीं हटाइ बड़ दुरगति के
रहिया चलत भेंट जो होखे
देबि सभे सुभ मति पति के"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न

१

नदी के तीर धइले साधु-दल आगे बढ़ल जाला
कटेला राह बड़ मनगर, पसनगर दिन चढ़ल जाला

भइल बा भोर नवका अब कहेला लोग गाँवन के
करुष के भाग जागल आजु पाके परस पाँवन के

खुलल बा भूँइ के छाती धइल थाती लुटावत खा
भरल बा हरख घर-घर राह के खरची जुटावत खा

खरा के घीव दे केहू, बरा के दूध के गगरी
उठावे गूर के चकरी सुघर केहू धरत पगरी

चलल केहू उठा ओड़ा भरल कन, मूल, रितु के फल
धइल केहू अमनियाँ अन सवदगर, डालि तुलसी-दल

भइल गुलजार बन-बगिया रहे जे गाँव का लगिया
खनत बा आरि केहू, जोरि केहू देत बा अगिया

मलत केहू रगरि के बाल कठवति, थार तामा के
भरत केहू कलस, अइले जुड़ाए अतिथि घामा के

करत दरसन सभे आपन उजागर भाग मानत बा
परत झुकि-झुकि हुलासल लोग मुनि के गोड़ छानत बा

रखाइल ऊँच आसन अतिथि खातिर, बा चउक पूरल
कहाइल भाव से—"बा धइल सातू-साग जे जूरल

भइल बा चूक बहुते बड़, कइल जा दया अपने के
पहुनई कहत लागे लाज बा मुलकात सपने के ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२

चलत खा राह में आवे घसकि जब साँझि के वेरा
कहत कर जोरि गँवई लोग—"इह वें डालि दीं डेरा

अगाड़ी सून पाँतर बा बहुत लमहर रहतिया में
कतो अनते रहल ना नीक होई घोर रतिया में

चलल जा गाँव का निअरा, बहारल फरिछ भुँइयाँ बा
धइल सरजाम बा सभ, मीठ जल के भरल कुँइयाँ बा

चलल बानी लमहरा से, चरन के धूरि धोवे दीं
भइल होई कमंडल भार, गँठरी तनी ढोवे दीं

रहत घरहीं मिलल बेतूल हमनी के तिरिथ के फल
सुनत उपदेस राउर भल सुधरि जइहें इहां के खल"

पसन से राति में मुनिबर धरम-चरचा चलावेले
मरम के बात मजगर ढंग से सभ के बतावेले

कहल चाहसु बहुत कुछु पर इहाँ ना ठहर पावेले
करनियाँ 'राम'-'लछुमन' के सुनाइ भरम भगावेले

गइल अनते पराइल 'करुष' से राछछ जनावेले
सुदिन का राह के रखवार 'दिअरा' के बनावेले

सुनत उपदेस मुनि के 'भोज' गन बड़ भाग मानेला
बचनियाँ आजु 'विश्वामित्र' के गुरु-मंत्र जानेला

बखानेला सभे घर-घर पहुँचि के सुजस बीरन के
बड़ाई हो रहल सगरे चलावल धनुस-तीरन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३

संख-घंटा आजु पहिले पहिल बाजल गाँव में
राति के टीकल बटोही पाँखि पवले पाँव में

होत बिहने लोग आइल दरस खातिर ठाँव के
जात बा लवटल उचारत 'राम'-'लछुमन' नाँव के

काँट-कुस नइखे कतो लउकत, सुपट ई राह बा
रेत बीचे चलि चले के, सोझ-तिरिछे बाह बा

कान्ह पर धइ हर-कुदारी जा रहल हरवाह बा
गा रहल बिरहा बइठि चरवाह बे परवाह बा

घाम कातिक के तनी बा टाँठ लागत चानि के
जात ना तपसी लखाले कतो छाता तानि के

दूरि से जल निअन झलके जोति झलझल रेत के
बाल-माटी मिलल चमके रूप जोंतल खेत के

जे गइल अगताह खोजे भोर में घर छोड़ि के
खाँच पर ले आ रहल बा माथ पर कुछु कोड़ि के

डोलि रहल बतास पछिवा आइ झुरु-झुरु पार से
जात बा माँकत हरिन-दल रहरि ओर सुतार से

आजु फिनु अइले अवधिआ कुँअर गाङ किनार पर
ठाढ़ हो गइले पहुँचि के कहत-कहत अरार पर

पाट बा लमहर, अजब बा ठाट तीनों घाट के
धार बा संगम भिरी के घार बड़हन बाट के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४

रहिया मुनि का गंगा-पार के सोहावन लागेले
बतिया लछुमन अउरू राम के मनभावन लागेले

सरधावान लोग का हाथे बड़ सतकार पावेले
मुनि का ज्वरे सगरे राजकुँअर पाहुन अस भावेले

बोरल होखे रस में अइसन मुँह के बात लागेला
काठ उकठ अस ना, पलुहल केरा के पात लागेला

अन-धन बा भलहीं कुछ थोर, मनवाँ बहुते मयगर बा
धइले बा 'दधीचि' के देहि 'सारन' सचहूँ दयगर बा

पवली जनम भवानी खास, बा बलिदानी ईंट-पथल
जहँवाँ बेटा काटत बाप दानी के ना माथ बथल

देखत गंगा-सरजू-नीर आगे राह गइल धाँगल
आइल निअरा गंडक तीर, भारी भीर रहे लागल

संगम पर असननिहा लोग, कइले बा बड़ चहल-पहल
कातिक के ई दरसन जोग पूरनवाँसी आजु रहल

जहँवाँ गज के उबरल जान, 'हरिहर छतर' कहाइल हा
रहि के दू दिन कइ असनान दल के जिया जुड़ाइल हा

अइले रिसि के संगी संत मेलो में सतसंग भइल
अचके 'गौतम' मिलले धाइ मुनि से, संका मेटि गइल

चलल बा देखे जग्य सभे, गौतम चहले साथ चलल
बिहँसि के मुनि कहले, "जाईं, जरूरी बा जहाँ लवटल"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५

पाँव धरत, थथमत, देखत धरती के पनिगर भेस
नाव चढ़त-उतरत निअराइल जाला तिरहुत देस
पसरल वा सगरे मखमल अस हरिअर-हरिअर खेत
झलकत वा इहवाँ कतहूँ ना रेह, पथल भा रेत
फेंड़ आम, लीची के अनघा वा केरा के पाँति
घासि-पाति के, वाँस बिरिछ के लहसलि रसगर काँति
सीति-घाम लागे जनि, वड़ सुकवार लतरि के जान
छान्हि छाइ के तोपि जतन से पोसल जाला पान
होत सकरकन बहुते लमहर, कतना करीं बखान
भूँइ के कहो, जल में भरल सिंघाड़ा मीठ मखान
कछ-मछ करत किलोल जहाँ जगहे-जगहे बा ताल
लउकत डाबर-डोल कतो ना, भूँइ जहाँ के खाल
वाढ़ि इहाँ का नदिअनि में आवेले साले साल
चारि महीना साँसति काटे मनई, गोरू-माल
भलहीं ना कासी-कोसल अस पकिया ऊँच मकान
पतलो-कण्डा का मण्डप के कम ना तनिको मान
मुनि-दल वढ़ल चलल धइले मनगर उतराहुत राह
झलकत आगे ठाढ़ धुआँ अस रहे पहाड़ निठाह
जहाँ जगत में नामी मिथिलापति 'विदेह' के बास
रहे जनकपुर नगर 'हिमालय' का कोरा में खास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प

रहे नगर का एक छोर पर बहुत सुघर अमराई
जहाँ ठाढ़ भइले मुनि-दल का जवरे दूनो भाई
निरमल जल से भरल लबालब पोखर पँजरे झलकल
मनहर ठहर पाइ मन सभके तहें रहे के ललकल

दिन अछइत उतरल दल कौशिक मुनि के राजा जनले
सुतरल भाग भूँइ के मन ही मन मिथिलापति मनले
लेके गुरु, उपरोहित, मन्त्री, नोकर-चाकर अइले
पाके दरस पाँव पर मुनि का पगरी आपन धइले
साधु-मण्डली के झुकि-झुकि पवलगी बन्दगी कइले
बेरि-बेरि पूछत मुनिबर से समाचार अगरइले

बूड़त-बूड़त किरिन लवटलन डेरा पर धनुधारी
आवत रहन झाँकि के बुझला मन्दिर के फुलवारी

देखि जोति अस बरत नयन मुँह बहुत बिदेह चिहइले
जाँचि-बूझि मुनि से, दसरथ के भाग सराहि सिहइले
करनी राम-लखन के रिसि तब अपना मुँहें बखनले
कहले—"राजकुँअर के अपना जवरे बानी अनले

धनुस-जग्य के चीठी राउर 'बघसर' में हम पवलीं
अजगुत कार होत बा कइसन देखे खातिर धवलीं"

सुनि कौशिक के सोझ बतकही राजा जनक जुड़इले
मुनि लोगन के खास भवन में कर जोरत ले अइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फ

मानसु ना नोकर-चाकर के
दूनों भाई एक कहल
चाहसु अपना गुरु के हरदम
अपने हाथे कइल टहल

खर्ह टकसावे के मुनिबर
उनुका के कबो अढ़ावसु ना
घटल-बढ़ल कौशिक के का बा
एको लबज कढ़ावसु ना

बरजसु कतनो, छोड़सु ना
दाबल पँइयाँ अपना हाथे
चरन-धूरि मुनि के राखे ले
राजकुँअर अपना माथे

रहे बतुस एके जे ले आवत
कबहूँ रिसि रोकसु ना
रहे राह एके अइसन
धाङत जवना के टोकसु ना ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भेंटत जवन पदारथ उनुका
कुछु दिन से बेतूल रहे
राम-लखन का हाथे तूरल
ऊ टटका बन-फूल रहे
भइल भोर पर लउकत एको
जंगल झाड़ी ना इहँवाँ
डहरि पूछि दूनों भाई
अइलन फुलवारी बा जहँवाँ

चारो ओर देखि सुनि के
फुलबगिया का भीतर गइलन
माली मनगर मिलल एक,
बतिआवत बहुते अगरइलन

किसिम-किसिम के रंग-बिरंगी
फूलन का पँजरा जाके
धरसु हाथ कलङी, छिउँकी पर
आगा माली के पाके

भरल फूल के दोना जब
मुनि लगे राम लवटल चहले
परल कान में धुन रुनझुन-
रुनझुन के, चिहुँकि गते कइले—

"लछुमन ! झट बाहर निकसीं जा,
पहुँचलि पोखर पर नारी"
कहत-कहत टनकार झाँझ के
झनक उठवलसि फुलवारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनहर लागल, पर का जाने
काहें राम सहमि गइले
परल डेग ना एको आगे,
लखन समेत बिलमि गइले

भइल भोर होखे फिनु से
अचके में कुछ अइसन लागल
गइल मेघ बरिसत हटि जइसे
लवटल रहे घाम भागल

खिलल कँवल हियरा के
रोंआँ ठाढ़ भइल धनुधारी के
भवन छोड़ि आपन तकले ना
अनते जे मुँह नारी के

लागल तनिक देर ना बूझत
आगम राजकुमारी के
साथ रही कुछु सखी-सलेहरि
आइल जनक-दुलारी के

रंग-रूप का बरनन खातिर
कवनो पटतर ना आँटा
सूरति जोति भरलि मूरति के
झलकि रहलि सोना खाँटी

गरहुआ लागेला सोना,
मोती-हीरा बा काँच-पथल
उपमा सीता के मुँह जोग
लखा ना के दो साँच कहल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माथ नवाँईं आपन हम
कर जोरि जनकपुर घाटी के
खास रंग दूधिआ गोर
होला जहँवाँ का माटी के

रहली ओही माटी के
सुघराई बेटी बैदेही
अपना हाथे हर जोंतत
पवले रहले राजा नेही

ठमकि गइल छन भर खातिर
जसहीं सीता के चलत चरन
टक-टक रूप निहारत
'बिजुली' के सकुचइले 'मेघवरन'

लखन लाल का ओरि मोरि मुँह
उलुटा डेग धरे लगले
भइल देर, सोचत फुलवारी से
रघुबीर टरे लगले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब

रूप सराहत सीता के
भरि राह लखन से अइले राम
फूल लेइ पूजा कइले गुरु,
सुनले फिनु उनुकर कहनाम

निरछल भाव देखि कौशिक
मनले ना तनिको भर सन्देह
अजगुत देहि-दसा रघुबर के
लखि, जनले रिसि साँच सनेह ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनहीं मन कुछ सोचि-समुझि
दिहले मुनि नीमन आसिरबाद
रखिहें रामचन्द्र इहँवों
आ के आपन-अनकर मरजाद

गइलन हुकुम पाइ मुनिबर के
नगर निहारे राजकुमार
भइलन चकित लोग देखत
सुकवार उमिरिया में हथियार

आजु एक दोसर से पूछे
पँजरा जाके होइ अधीर—
"साँवर-गोर बीर कहँवा के
अइलन लेले धनुहा तीर ?"

सुनले रहे अगतहीं जे कुछु
बोलि उठल ऊहे अकुलाइ
हुलिया राम-लखन के दिहलसि
अपना जाने भर समुझाइ

भइल सहर में धावा लागी
अस, केहू ना मानल चाँप
सँड़क-गली का बीचे नीचे
झाँके खातिर उघरल झाँप

लरिका, बूढ़, जवान सभे
चाहेला रहितीं हमहूँ साथ
कहँवाँ ले जइहें इनिका के
फिनु अपना जवरे मुनिनाथ ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घरी पहर के भेंट भइल बा,
ना जाने आगा का होत ?
कहे सभे, लउकेला ना
जे रखले बाड़े दइब अलोत
जगहे-जगहे लउके ठकचल
लइकिनि, लरिकोरिनि के गोल
बुढ़िया बइठल - बइठल तउलत
रही कठोर परन के मोल
उनुका देखे में लागल
राजा के बहुत कठेठ करेज
धनुहा टूटल दीहल चाहेले
बेटी के तिलक दहेज
बतिया राजा के माने के
चाहीं जे मिलि कहिते पाँच
बुझला अँजरा - पँजरा उनुका
नइखन आजु सलहिया साँच
देखीं होला कइसन, कवना
रङ के धनुहा तूरनिहार
आवे के अइलन कतने
राजा ना एको काँच कुँआर
बड़हन भइल भाग जे मुनि
ले अइले राजकुँअर दू नीक
पहुँचल अपना मने अङनवाँ
बुझला आजु लगनवाँ ठीक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोलि उठलि केहू 'चलि के
छानीं जा जनक राज के गोड़
छोड़ि देसु हठ, देखसु तनिका
बर आइल कनियाँ के जोड़

तूरी जेही धनुहा, ऊहे
मानल जाई बर बिनु भेव
बाँहि धरी अब राजकुमारी के
मनई, राछछ भा देव'

'राछछ ले जाई सीता के ?'
लागल सुनि के घोर सराप
बोललि केहू हलुक आजु
राजा बिदेह के कहि कठवाप

अपना जाने बर ढूँढ़े में
हो गइले राजा अलचार
अबहूँ से कहिते, हो जइती
बेटी सकल पंच के भार

चतुर सँवाँगिनि एगो कहलसि—
"नइखे निहँसे के कुछु काम
गनल फेंड़ के छोड़ल जा अब,
बा मतलब खइला से आम

सुनले होखबि सभे, रहेला
निसिचर दल गंगा के पार
कल से, छल से, बल से होला
हमनी से बहुते बरिआर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बल हजार हाथी के पवले
रहे 'ताड़िका' चुरइलि एक
दल बनाइ आपन रिसि-मुनि पर
कइलसि कसि के वार अनेक

भइले रिसि-तपसी कतने
सँपरल ना केहू से उपचार
बिस्वामित्र महामुनि 'बघसर' के
कइले सभ के उपकार

ले अइले जगि के रखवारी
खातिर अनकर माँगि सपूत
तीर - धनुस के मन्त्र सीखि के
लछुमन-राम भगवलन भूत''....

ऊदम रहे आन ना घर में
'नयना' का पुतरी के जोग
संकर धनुहा ठहर देत खा
टारसु 'सीता' जाने लोग

धिरिजा में धरती माई अस
लागसु, लउकसु बहुत गम्हीर
उनुका गूङी हो भलहीं
उचरे नर-नारी उनुके पीर

नीके तनी बिचारल जे
मन में अपना ऊ बूझल बात
देखे में बा उमिरि राम के
छोट, हेठ नइखे अवकात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाल - ढाल चीन्हल जे दूनो
राजकुँअर के, बान्हल गाँठ
ऊँच - खाल कहिहें कतने
राजा, पर राम कहइहें टाँठ....

घूमत - फिरत नगर में बीतल
तीसर पहर भइल गधबेर
जोहत रहसु बाट गुरु अइलन
राम - लखन जब जानि अबेर

आके मुनि लोगन का बीचे
कइले मनगर राम बखान—
"सोभा भरल जनकपुर में
नइखे कतहूँ अन-धन के टान

बड़ भारी नगरी में आदर
पवलीं हाँ जा ठाँवे-ठाँव
नर - नारी के नेह देखि
लागल ना इचिको अनकर गाँव"....

भइल राति खा मुनिबर का
मुँह से कुछ रोचक कथा-पुरान
गइलि आँखि के नीनि जनक के
दूत हँकरले होत बिहान

'शतानन्द' 'कौशिक' का पँजरा
भइले ठाढ़ कहत कर जोरि—
"करीं आजु अपने सभ दया
पधारीं जगि - मंडप का ओरि"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइल सुदिन आजु जोहल हा
नगर - निवासी जेकर बाट
धावल सभे रंग-शाला में
देखे किसिम-किसिम के ठाट
भारी भीर भइल सुनि के
राजा कइले मंत्रिन से राइ
"जाईं, आसन अनघा बा
दीं सभ के जथा जोग बइठाइ

गइले बइठि मंच का ऊपर
देस - देस के आइ नरेस
धइले पाँव महामुनि के
कइ आदर-भाव बिदेह बिसेस

मुनि जवरे सगरे टहरावत
राम-लखन के भइले ठाढ़
अपनइती में कहले राजा
कौशिक से आपन दुख-गाढ़
जरले देखि-देखि खल राजा
मनले चुपका भइल करार
धनुहा बे तुरले जो होई
कन्यादान, मची तकरार
तेवर तानि चिहइले कतने
कइले कतने अँखिया लाल
संकर-चाप चढ़ाई जे
पाई गर में ऊहे जयमाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ताव देत अँइठत मोछिन पर
लगले एक बजावे गाल
एक बेरि हमहूँ अजमाइबि
सीता खातिर जीतबि काल
रहलन कुछ राजा भल बइठल,
बूझत मन में बड़ अगरात
झलकसु नर-नारायन लेखा
जिनिका लछुमन-राम छछात
"आन के कहल सुनले होखे
पहिले जे केहू गुनगान
रूप-रंग से राजकुमारी का
जनि आजु रहे अनजान"
कइले जब राजा पुकार
आ गइली सीता सखियनि-संग
भइली ठाढ़ लेइ जयमाला
रंग-भूँइ में एक अलंग
देखि-देखि अनबोलति मूरति
उपजल किसिम-किसिम के भाव
मोकि गइल नारी-नर, केहू
खातिर भइल निछोही घाव
असमंजस में परल नयनवाँ
सीता के बनि गइल चकोर
मुनि का पँजरा लछुमन जवरे
रहले रामचन्द्र चितचोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखल सभे रंग सीता के
चमकत रहे गोर टहकार
साँवर भले कहावसु, रहले
दमकत राम लाम-लहकार

तन पर रहे जानकी के
गहना रुचिगर, मनमोहक चीर
रघुबर रहसु धीर जइसे
हो बिनु जुआर सागर के नीर

कहले जनकराज सभका से—
"देखीं कइसे उतरी रीनि"
लगले रंग-भूँइ में उतरे
राजा लोग एक-दू-तीनि

सभे तमकि के हहुआइल
पहिले धनुहा का पँजरा जात
उठे के कहो के ? 'शंकर' के
चाप छुअत अधिका गरहुआत
टस से मस ना भइल धनुस
जवरइलन भलहीं हाथ हजार
"अब का होई ? कहीं सभे !"
पूछत बिदेह कइले ललकार—
"सुनलीं हम अपने सभ कइलीं
अबले जे अनेर अभिमान
जनलीं आजु जगत में नइखे
केहू साँचो के बलवान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खीसि-पीति से भरल करेजा—
से निकसेला एके आह
ठानि परन हम जनलीं अब
बेटी के नइखे लिखल बिआह
हमरा हठ का चलते आजु
दुखित बा सँउसे कुल-परिवार
मनलीं आज़ गूढ़ नइखे
मति बा धनुहा अस मूढ़ हमार"
बहुते अपना दुख का कारन
कहले राजा बात लगाह
सुनि के तनी लगवले मन में
लछुमन ओकर अँटकर-थाह
बिनु जबाब के इहँवा होखे
चाहत बा अकाज अब घोर
भरल सभा में रघुबंसी ना
भइले हा कबहूँ मुँहचोर
पँजरे बइठल बड़ भाई के,
गुरु के सोझा माथ नवाइ
लिहले फट से बीर लखन
फेंकल बिदेह के बात उठाइ
हाँ—हाँ कहत—कहत में देखल
सभे लाल सोना के रूप
जाड़ा के बदरी फारत
निकसल हो जइसे रूखर धूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहले तनी टाँठ होके—
"आइल बिदेह पर गार्ह सकेत
तबहूँ बोले का पहिले
राखे के चाहीं उनुको चेत

हनुक कढ़ावत लागल ना
आहस सभ के, रघुबीर समेत
धनुस-बान के करतब जिनिकर
देखि चुकल कहिए रन-खेत ?

चाहत नइखीं उनुका ऊपर
राखल अइसन - तइसन भार
माङत बानी हुकुम, देसु,
धनुहा का, हम उलटबि संसार

बिना पिता - माता - गुरु के
चहले ना कइलीं जा कुछु कार
सङे महामुनि ले अइली हाँ
जागि देखे के एह दुआर"

रहे कहल भाई के साँच
तरेरे लगले तबहूँ आँखि
खुले जात जे रहे उड़े खातिर
रघुबर जँतले ऊ पाँखि

बिलमल नीक रहे ना अब
आइल सुभ घरी लगन समतूल
मुनिबर बिहँसि राम से कहले—
"उठऽ हरऽ राजा के सूल"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माथ नवाइ चरन पर गुरु के
भइले सोभ ठाढ़ रघुबीर
लेत असीस साधु-संतन के
धनुस धरे चलले बड़ धीर

हुलसल नर-नारी नगरी के,
रहली रानी बहुत चिहात
अतहत भार ? कुँअर सुकवार ?
उठइहें ? ई ना मन पतिआत

हाथ लगावल ना चहले
रावन बलवान परइले भागि
पाँखि फतिंगन अस बीरन के
जरल छुअत धनुहा के आगि

ना-ना कबो पार ना पइहें
बा बहुते कठोर ई जाँच
केहू बरजनिहार ना रहल
गइले लूझि उमिरि के काँच

रही जानकी परल अफदरा
बिनवत मन में गउर-गनेस
तनी सहाइ होइ जइते अब
अबढर दानी देव महेस

परलि राम के नजरि, रहे
सोना के मूरति जहाँ तँवात
गइल देखि ना उनुका से
सोचे सीता के मन मरुआत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लखले लखनलाल, कहले—
"जे.बा जहँवाँ, हो जाउ सचेत"
बिजुली अस चमकल हाथे
गँव से रघुबर के धनुहा लेत

ना खुलि पावल अक बक अस
हाँकनिहारन पर छवलसि धाक
टूटल बीचे बीच धनुस
भहरइलन कतने सुनत 'तड़ाक'

छाती भइल दोबरी कौशिक के
तबहूँ ना भइल अँटाव
पानी बढ़ल राम का जस के
उमड़ल मुनि के दिल- दरिआव

रानी जवरे सूखत सभे
सखिनि के परल जान में जान
चिन्ता-सागर में पँवरत-
पँवरत बिदेह के मिलल अड़ान

भइलन कुछु जरिछार, बहुत
राजा रहलन हूके बेहोस
बहुत कठिन बा इहाँ बखानल
अब सीता के सुख-सन्तोस

मुँह भाई के टुक-टुक ताकत
कहाँ लखन के नयन अघात ?
"पहिरावसु जयमाल जानकी"—
शतानन्द का मुँहे कहात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम गरे माला पहिरावत
सकुचाला सीता के हाथ
तेज आगि के जोरल जाला
माटी का महिमा के साथ

सीता-राम बहू-बर बनले
ना दुरजन से आजु सहात
बाई लेलसि खल - कुचरन के
होइ गइल जइसे सनिपात

जे अवले उज़बुक अस लउकल
चाहल ऊहो बनल चल्हाँक
हाँकत डींग अकड़ि के डोलल,
बोलल बढ़ि के बनि चढ़बाँक

हर-हर, पट-पट होखे लागल
रंग-भूँइ का निअरा आहि !
गड़बड़ कुछु होई बुझला
लागल चाहेला भागि-पराहि

अतने में आ गइले आन्ही अस
एगो अगिया - बैताल
धइले चमचमात फरसा
कान्हे, रहले सरूप बिकराल

सुनले जबे जनकपुर में
बा भइल धनुस शंकर के भंग
धवले छत्री-बंस उजारन
काटे खातिर अनकर अंग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोर भभूका देहि पर रहे
मलल भभूति, लिलार त्रिपुण्ड
चान निअन मुँह, जटा माथ पर,
धन्हकत आँखि अगिनि के कुण्ड

कान्ह ऊँच, चाकर छाती से
जोरल दूनो बँहियाँ लाम
टेढ़ भँहूँ, डाँड़े मृगछाला,
हाथे धनुहा के सरजाम

थर-थर काँपत रूप देखि
जवराइल राजा रहन तमाम
'भृगुबंसी' रिसि 'परशुराम' के
उठि-उठि लगले करे प्रनाम

नवले राजा जनक, जानकी
गइली जब असीस सुभ पाइ
मिलले विश्वामित्र हीत अस
राम-लखन से चरन छुआइ

दिहले परिचे कहि के राजा
दसरथ के ई हवन सपूत
लिहले दम, मुँह तिकइ राम के
रहसु कहावत जे जमदूत

हाली-हाली परशुराम के
खतमाइल कसहूँ अगवान
"काहें खातिर भीर भइल ?"–
कहले अनजान मतिन बुधिमान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धनुस-जग्य के बात परसुधर से
दिहले बिदेह बतलाइ
सुनत, ताकि तूरल धनुहा,
गइले भृगुपति अधिका अगिआइ

"सोझ मने जढ़ जनक बतावऽ
के हऽ धनुहा तूरनिहार ?
देखबि आजु बाँहि-बल ओकर
ठाढ़ करावऽ होउ चिन्हार"

डर लागल बहुते बिदेह के
रहले चुप सुनि के फटकार
पर-पाहुन अनते के रोकि
सकसु ना परशुराम के वार

हँसत मने मन बाड़न खल
बड़ सोच-फिकिर में बा रनिवास
टरल लगन आ के बुझला
सीता के होत रहे बिसवास

रहे आन केहू हदसल
जब चाहीं उनुका पर इलजाम
बिना सान भा सोच के कहे
उठले परशुराम से राम—

"होखी धनुहा तूरनिहार
अपनहीं के सरकार ! गुलाम
चाहीला हम हुकुम बजावल
सुनितीं कुछ राउर कहनाम"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परल नून फोरा पर जइसे
जइसे गिरल आगि में घीव
लहकि उठल सुनते मातर
'भृगुपति' के छन-छनाइ के जीव

"सहसबाहु' अस सतुर बनल हा
के धनुहा शंकर के तूरि ?
हिगराव झट राम ! चटाइबि
नाहीं त सभ के हम धूरि"

गरजल देखि राम पर, मुनि से
चहले कइल लखन कुछु कूटि
'खिसिअइलीं ना जब बचपन में
गइली कतने धनुही टूटि

रउआ आजु एह धनुही के
लागे काहें अतना मोह ?"
सुनते परशुराम कहले—
"कइले बा काल तोर अब जोह

जनले लूरि - ढंग ना तनिको
तें बोले के सीखु सहूर
धनुही कहले शंकर का
धनुहा के, जे जग में मसहूर ?"

कहले लछमन—"हमरा जाने
धनुस जगत के एक समान
छुअते टूटल राम से, रहे
घुनल, बन करीं अब कलकान"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फरसा ओरि ताकि भृगुपति
कहले—"सुनु दुष्ट ! हमार सुभाव
कतने बेरि थोर कइलीं
छत्री राजन के बल-बउसाव

सहसबाहु के छँटलीं बँहियाँ
हम, जनि डलिहे कहियो भोर
चमचमात फरसा निहारु तें
चेतु बाप - माई के लोर"

हँसि के तनी लखन कहले—
"फरसा चमकावल इहाँ अनेर
गरजीला रउआ जइसे
बान्हल हरिना पर छड़पे सेर

अङुरी देखि मरे जे, ना
कोंहड़बतिया बा इहाँ लखात
फरसा, धनुस-बान देखत
निकसल कुछु हमरा मुँहे हठात

नाहक ढोईला अतना
हथियार, हलुक बा जेकर चोट
आपन किरिए बतिए राउर
नइखे कोटि बजर से छोट"

कहले अगिआइल भृगुपति
कौशिक से नीके तरे धिराइ—
"लउठाई एकर छूटे खातिर
हमार दीं खीसि जनाइ"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कहलीं कम ना अपने रखलीं
ना अनका खातिर कुछु छोड़ि
मन होखे दीहीं अउरू
गारी, हम लिहलीं माथे ओड़ि

कहले परशुराम से मुनिबर—
"छमा करीं बालक अपराध"
"कहला से छोड़त बानी,
बाकी बा एकर रोग असाध"

लछुमन-परशुराम के बीचे
बढ़ते जात देखि के रेरि
अनभल कहल लोग, जँतले तब
राम लखन के आँखि तरेरि

उठले राम कहे कुछु जे सुनि
परशुराम के आगि निझाउ
लरिका के होले अटपट
बतकहिया, उनुकर मन पतिआउ

तनी जुड़इते भृगुपति जबले
कहले कुछु लछुमन मुसुकाइ
बढ़े जात दियरा किरोध के
रहे, तबे दिहले उसुकाइ—

"बटुराइल बा राम ! माथ पर
भाई के तहरा बड़ पाप
हमरा पर लागी ना अब
तनिको भर मरला के परहाप"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहले लछुमन–"मुनिजी ! क्रोध
कहाला सभ पापन के मूल
अब ना कुछु बोली, सेवक ई
राउर छमा कइल जा भूल

खिसिअइला ले टूटल धनुहा
जोरे के ना बात बुझात
बहुत देरि से ठाढ़ भइल
होई अपने के पाँव पिरात"

इरिही–बिरिही सुनि के लागल
बिगदे चाहत बनलो काज
कर जोरत रहले रघुबर
काँपत थर-थर-थर नगर-समाज

बहुते नेवर बचन राम के
रहे जहाँ ना गरब-गरूर
कहले—"डाँड़ीं, बान्हीं, मारीं
हमरा के, जे कइल कसूर"

जिया-जुड़ावन बात राम के
सुनि भृगुपति के उपटल दाह
दया-मोह का जगहा पवले
मनमें अपना जरनि निठाह

फिनु टुभुकल सुनले कुछ,
छोट कुँअर के पवले बड़हन खोट
झपटत कहले—"धरऽ एह
पाजी के जनक ! आँखि का ओट"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घूमि राम का ओर छने में
बदलल परसुराम के रोख
"तूरि धनुस शंकर के खल तें
चाहेलसि अब दीहल तोख ?

पढ़त आ रहल बा सलाह से
तोर छोट भाई सभ ताल
बढ़त जा रहल बा दूनों के
मन, लखात बा एक कुचाल"

ताल ठोकि के हाथ मिलावल
चहले भृगुपति फरसा तानि
टेढ़ आन केहू लउके,
पर सभ से सोझ राम के बानि

हाथ जोरि कहले रघुबर—
(तकले कबहूँ ना आँखि उलाटि)
"खीसि-पीति छोड़ीं, अब धइलीं
फरसा तर गरदनि, लीं काटि

साधु-सन्त का संगति में
देखल कइलीं जा देस-बिदेस—
रूप दया-माया के सगरे
मुनि लोगन के रहल हमेस

भाई लरिका बा, पवलस ना
रउआ में मुनि के लवलेस
होई सुनले नाँव, रहे ना
देखल ओकर राउर भेस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीर रूप में जे आके
पूछी जबाब दीही रघुबंस
बिप्र देव में चाहीं झलकल
दया, छमा के अनघा अंस"

आपन नाँव 'बिप्र' भा 'मुनि'
सुनि परसुराम के उपजल रोस
बे बिचार के बोलत खा
बढ़ि-बढ़ि के उगिले लगले जोस

"हलुक दोस पर अगिअइलीं"
—कहले रघुबर—"ई भारी दण्ड
धनुस जाकड़ी, टूटल छुअते,
कवन बात के करीं घमण्ड ?

होला बाम्हन जानि निरादर
राउर, ई जनि जानल जाउ
के बा अस रनबीर बताईं,
जेकर डर-भय मानल जाउ ?

हवन-कुण्ड का जोति सङे जे
देखल कइल बेद-भगवान,
रिसि-मुनि, तपसी लोग पा रहल
जग में सभका से सनमान

कायर ऊ जे अपने सभ का
सोझा आइ बघारे सान
मानत डर अपने सभ के
बनि जाले निरभय चतुर-सुजान"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइ सभा में बकले अकबक
बहुत, कहत जिनिका के ढीठ
राम का मुँहे पवले भृगुपति
अपना जोग दवाई मीठ

लिहले अपना जाने भर में
बल-बउसाव देखि-अजमाइ
लछिमीपति के धनुस राम का
हाथे गँव से गइल धराइ

पानी-पानी हो गइले, फिनु
पवले अचके अजब हुलास
ज्ञानी भइले अभिमानी मुनि
नर में लखि नारायन खास

बन में गइले तप खातिर तब
परसुराम कइ जय जय कार
कहले जनकराज कर जोरत
मँझधारा से पाइ उवार—

"उचरि रहल बा रोआँ-रोआँ
मुनिबर! हुलसल राउर नाँव
जनम सुफल हो गइल, रहबि
जिनिगी भर पूजत राउर पाँव!

रउरे छोहे दूनों भाई
भइलन हमनी के आधार
हमरा घर में देबे जोग
कहाँ बा इनिका के उपहार?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे हम का करीं, तनी
अपने के हुकुम जनावल जाउ
पूछेला परिवार, बताईं
कइसे रसम मनावल जाउ ?"

बिहँसत मनही मन कहले
कौशिक—"चलवाईं कुल के रीति
भइल बिआह जबे पसिजल
धनुहा लखि सिया-राम के प्रीति

भेजीं अब झटकल मिथिलापति !
अवधपुरी में आपन दूत
ले आवसु राजा दसरथ
बरिआति पाइ मजबूत सबूत"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भ

बाढ़ि रोकल बा कठिन उमड़ल नगर का भीर के
आँखि के पुतरी बनवलसि जे लखन-रघुबीर के

कार दोसर नीक ना लागे दरस का सामने
छोड़िके केहू नयन-सुख ना टरे अपना मने

बा निहाल सभे, कहात हुलास ना रनिवास के
बा बखानल कठिन बड़ सोभा जनक-आवास के

राति-दिन लागे मनोहर इहाँ अगहन मास के
बा सरस हितई जहाँ ससुरारि तिरहुत खास के

राम-लछुमन के लखाला चाल-रहनि गम्हीर अस
रूप साँवर-गोर बा जइसे सिङारल बीर रस

जोह बा फिनु कब निकसिहें साधु-दल का बीच से
मोह बा सभ के, तनी लिहितीं निहारि नगीच से

ठाढ़ एके गोड़ पर लउकसु जनक कर जोरि के
बात कुछु मुँह से कढ़ावसु दूध-मिसिरी घोरि के

देत बा मुनि लोग आसिरबाद बहुत बिदेह के
बा सराहत सभे उनुका भगति, सरधा, नेह के

जात बा सतसंग में बीतल मनगरे राति दिन
होत खातिर-बात विश्वामित्र के समधी मतिन

आजु सम-धी कहत कौशिक के बुझात सँकोच बड़
ज्ञान जिनिकर देखि अपना के बतवले जनक जड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

म

मुनि का दरसन खातिर राजा
साँझि-बिहाने आवे लगले
चरचा मानव धरम के चले
कहि-सुनि के सुख पावे लगले

लागल उनुका पहिले के सभ
सुनल बतकही करकर जइसन
'याज्ञवल्क' 'जाबाल' ना रहन
कहले रुचिगर मुनिबर अइसन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोर-मोर बहुते 'गार्गी' सङ
भइल रहे उनुके दरबारे
टेढ़। अंग पर हँसत लोग के
कहले 'अष्टावक्र' चमारे

दछिना का लोभे राजा का
दुअरा कतने धावल आवसु
जगि का जवरे दान करे के
महिमा बड़ ईहे समुझावसु

लउके राजा का गाइन के
तामा से बा सींघि मढ़ावल
छउके सास्त्रारथ में ऊ जे
चाहे उलुटा पाठ पढ़ावल

लागल सरके धुआँ-धुकुर अस
आतम, बर्हम-ज्ञान के बतिया
भावत रहन जनक के ना अब
लाल बुझक्कड़ करत हुजतिया

कहल-सुनल अनगिनित पन्थ के
बरल धूरि में जेंवरि जनले
बिधि-निसेध के घेरा डालल
कतने बे मतलब के मनले

सुनि कौशिक मुनि का मुँह से कुछु
बुधि बिदेह के जागे लागलि
सुर गूँजल नवका बिहान के
राति भरम के भागे लागलि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राखसु सभ का सोझा मुनिबर
आपन सभ अनुभव सरिआ के
सोझ कहसु, अझुरावसु ना कुछु
भेद बतावत खा फरिआ के

धीर बहसु गंगा का जल अस
बोलत असली बात मरम के
बीर कहावत रहसु बदलि जुग
खोलत बान्हल छान धरम के

"धारन करते आइल अब ले
जग के जे ऊ धरम कहाला
राखल धरम सकेतो परि के
पावन सभ से करम कहाला

मनु के जामल-बाढ़ल मनई
धरती ऊपर धइहें सगरे
घर-आङन के लाँघत जइहें
गाँवें-गाँवें नगरे-नगरे

किसिम-किसिम के रूप-रंग में
बोलचाल में पावल जइहें
रहनि-ढंग में, खान-पान में
भेद अनेक बतावल जइहें

होई एके अस जनम-मरन
अनगिनित भले भँवजाल रही
काटीं कवनो मनई के रग
पर रंग खून के लाल रही"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहले सभ से मुनि समुझा के
बरिआर धरम के लच्छन दस
दिहले लखाइ कौशिक गँव से
आँटल बा अतने में सरबस

"जे धिरिजा राखी धरती अस
मन में ना कबो किरोध करी
ई धरम सनातन सभ खातिर,
केहू ना कतो बिरोध करी

जगि, जाप, जोग, पूजा-अरचा
सभ का ऊपर ई चढ़ि के बा
कथनी-करनी में ताल- मेल
राखत ई सभ से बढ़ि के बा

जब भइल चेत पहिले, देखल
मनई चिहाइ के देव-रूप
भय गइल भागि अगिया जोरत
महिमा पवलन जगि, दीप, धूप

माटी, पहाड़, नदियनि, बन सङ
रहले तब मेघ, पवन सेसर
पावे लगलन पाछे रिसि-मुनि
सगरे अकास में परमेसर

हमरा जाने बूझे भर में
भगवान धरइहें ना तब ले
पुरुसोतिम हाथ-गोड़ अछइत
अवतार कहइहें ना जब ले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निरगुन मन का भीतर रहि के
गार्ह-सकेते ना उपरइहें
जनम-मरन मनई खातिर
होई तब हीं मनई पतिअइहें
हमरा सोझा सुनीं महीपति !
का केहू अब ज्ञान बघारी ?
अतना तरक-जाल जे तानल
ऊ का अँटकल जान उबारी ?
छोड़ीं अजगुत अरथ निकासल
जोहीं ऊ जे कामे आई
सोचीं, बाथा से कँहरत ई
दुनियाँ कइसे बदलल जाई
अनका गाइनि के अइले हा
पीअत घी.व बइठि के भोगी
उतजोगी बनले मुँहदूबर
पवले मान अकरमी जोगी
ढोवत कपार पर मन्त्र चलल
केहू बहुते उपदेस रटल
जोखिम अइला पर छूँछ ज्ञान
नइखे कतहूँ पल एक ठटल
सभ जिया जन्तु से बढ़ि के बा
मानुस, बिचार के बल पा के
पर कहाँ लगावल जात जोर
जे राखित परबत घसका के ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे बइठल रहल बान्हि पगरी
रखवारी करत किनारा के
जे रहल तमासा देखत ऊ
ना मोरि सकल जुगधारा के

ई आइल हा, जाई चलते
सर-सर-सर बहता नीर निअन
होला समाज का नदिया के
संगम ना सागर-तीर निअन

ऊपर ना डेग उठी, जो ना
धरती से एँड़ी करी रगर
ना जिनिगी आगे बढ़ी कबो
छोड़ी ना जो बिछिलाह डगर

जे देखल चाहे परम सत्य
जाने जतरा के अन्तहीन
माने, होला ना अचके कुछु,
बा कारज सभ कारन अधीन

राउर-हमार बोली बिदेह !
काहें ना एक समान भइल ?
सोचल जा ज्ञान अचल राउर
काहें ना कबो हरान भइल ?

निसिचर से करे करुष घरसन
मिथिला में होत सास्त्र-दरसन
लउठन के सहीं अखरखन हम,
रउआ पर रहसु देव परसन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिना जरूरी भइले होला
दुनियाँ में ना जनम जोह के
कहाँ पोह पवलसि रहबट के
मयदाना अस नीनि खोह के ?

अनकर कार बनवलीं आपन
तब हमरा कुछु सूझे लागल
रघुबर हाथे धनुहा टूटल
जग उनुकर बल बूझे लागल

दिहलीं हम आहुति बहुते
पर देव हवाई कवन काम के ?
महिमा मानव के अपार बा
जनलीं हाँ अब पाइ राम के"

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

य

किरिनि अछते जनकपुर में आ गइलि बरिआति
सुनत मातर लोग चलजन मिले बान्हि जमाति

साजि आपन दल चलवले जनकराज महान
आजु मिथिला में करे अवधेस के अगवान

बा भरल सगरे नगर में डगर-डगर उछाह
कान्ह पर लरिका चढ़ल, ना बूढ़ के बा बाह

गड़गड़ाला बड़ 'नगारा', 'तड़तड़ाला' 'ढोल'
झनझनाला-टनटनाला 'झाँझ'-'घंटा' गोल

बा 'रसनचउकी' सुनावत राग नीमन बोल
सोझ उलुटा कुछु कढ़ावत खोलि 'धुधुका' लोल

होत बा फँफराह तनिका पाइ घोड़ा-दवर
जा रहल रमते-झमत अब ऊँट-हाथी जवर

आ रहल अनगिनित रथ पर लोग होइ सवार
राम के बरिआति सुनि के टूटि चलल जवार

रोक-थाम्ह भइल रहे मानल तवो ना लोग
बास दिहले नीक राजा जनक सभ का जोग

खाँच-ओड़ा-छँइँट-नादा भरल जिनिस तमाम
मीठ, चटपट, सरस 'धुरछक' के रहे सरजाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नगर का नियरा टिकावल गइल देखि सुपास
सगर सुख के ठहर बा राखल गइल जनवास

आ रहल बाड़े महामुनि राम-लछुमन साथ
धाइ जिनिका चरन पर अवधेस धइले माथ

बाँहि में कौशिक सम्हरले, होत बा अँकवार
लोर दसरथ के हरख के ढरत बारम्बार

राम-लछुमन अहगरत छुअलन पिता के पाँव
जोति पवले आजु राजा, भइल नयन-जुड़ाँव

जोहि गुरु के चरन धइलन राजकुँअर लिलार
हाथ फेरत माथ पर रहले वशिष्ठ उदार

सत्रुघन सङ भरत कइले जेठ के परनाम
देखि अगरइले लखन, अँकवारि बन्हले राम

हीत - नाता रहन जतना गाँव घर के लोग
हाथ जोरसु नेह लेले राम सभ का जोग

दूरि से आइलि रहे बरिआति कुछु अगताह
सोधि सुदिन लगन धराइल आजु होत बिआह

आ रहल बरनेति, गहगह भइल जनक-दुआर
सोर बाजा के सुनाला गीति के झझकार

पालकी में राम दुलहा के भइल गलसेद
जेठ रहलन अछत छिरिकत, भनत पंडित वेद

देखि के मंडप अवधिया लोग गइल सिहाइ
आसनी पावत सभे ताके चिहाइ-चिहाइ

पूजि पाँव वशिष्ठ मुनि के देवता अस खास
लेसु आसिरबाद नइ के जनक भरल हुलास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोस का आगा जनासु बिदेह अब बेहोस
पाँव कौशिक के पखारत होत ना सन्तोस
हो रहल कर जोरि के अवधेस के सतकार—
"चूमि अपने के चरन आङन निहाल हमार"

खास माड़ो तर भइल बरिआति के सनमान
भाव समधी अस लखा, जानसु जनक ना आन

पाइ बेरा–बखत फूटल जोति के जस सोत
बा चकित बरिआति अब कन्या–निरेखन होत

मानि आपन कुल-महातम सुनल साखोचार
हाथ-बाँहि धराइ कुँअर-कुँआरि के परिवार

भइल बा बहुते पसन से लोक-बेद-विधान
चउक बइठि जनक–सुनयना करसु कन्या-दान

फिरसु दुलहा सङे दुलहिनि, हो गइल गँठजोर
सज्जन हुलससु देखि भाँवर देत साँवर-गोर

गा रहल बाड़ी सरस सज्नी बिअहुती गान
दूइ नयन, अपार सोभा भरल सेनुर - दान

सोचि के मिथिलेस मन में रहसु बड़ अगरात
छोट लरिकिनि तीनि के बर जोड़-जुगुत लखात

हुकुम पाइ वशिष्ठ मुनि के, बाँटि हरदी-धान
भरत-लछुमन-सत्रुघन के हो रहल फल-दान

धिया भाई के रही 'माण्डवी' बड़ सिलवंत
हिया-हरन जुड़ात भइले भरत जिनिकर कंत

जानकी से छोट रहली 'उर्मिला' गुनवान
गाँठ जोरि लखन सुरुज सङ चलसु चमकत चान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोर 'स्रुतिकीरति' कुँअरि के रहे सुघर सरूप
'सत्रुघन' पवले चिहा के चाननी तर धूप

कोहबर के रसम कइली सासु, सरहजि, सारि
एक का जगहा रहन ससुरारि पवले चारि

पा रहल बरनेति पीढ़ा, जेवना के थार
हाथ-मुँह का बीच राखल वा छपन परकार

चमक चानी अस सकस जामल दही के खास
कहल नइखे जात चिउरा के सुवास-मिठास

आदि - अन्त रहे अवध में घीव अवरू गूर
भोज में ना करुष के चिउरा - दही मसहूर

आजु गारी सुनत केहू के जरे ना जीव
काँट अस अनते गड़ित जे ऊ इहाँ वा घीव

बाप दुलहा के कहावसु ऊँट, माई छेरि
आन केहू से कहइली खोट फूफू ढेरि

अवध के मुनि लोग झारसु गिरिहिनिनि के केस
करुष के रिसि पथल में पावसु परी के भेस

खात हँसि-हँसि भात—लुचुई गइलि पाँति अघाइ
आजु-काल्हु करत-करत में नवन पहुँचल आइ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

र

चहले बहुत बिदेह, टरल ना
बेरा आजु बिदाई के
सुनते मातर बिहरे लागल
हिया सुनयना माई के

जानत रहसु जनक अगते से
आइल इहँवाँ जे, जाई
मानत रहसु घरी अधिका ना
एको छन बिलमे पाई

अइलन राजकुँअर चारो
अङ्ना में भीर भइल भारी
झरत नयन महतारिनि के
झर-झर, सुसुकत बा नर-नारी

दोसी जनम - करम खातिर
ठहरावे सभे बिधाता के
मोहे मरम लखाला ना
बेटी-दमाद का नाता के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोप धान का बिरवा अस
धरती ऊपर बेटी अइली
पोसि-पालि नइहर बीअड़ में
ससुरा में रोपल गइली

रहरि-मटर भा गहुम-ज़ूँट अस
बेटा बीर जनम पावे
उगत-बढ़त एके ठहरे बा
फरत–झरत एके ठाँवे

दूरि देस के सगसोरी बा
जानत रहे सभे नीके
काढ़त बहुत कलेस पा रहल
हाथ नयन का पुतरी के

नइखे काम बिदेह नाँव अब
मिथिलापति का धइला के
अपना जमला से अधिका दुख
बा सीता का गइला के

रानी रहि-रहि हाथ जोरि
बतिआवत रहली रघुबर से
सीता के गुन-सील-सुभाव
जनावत रहली रघुबर से

"धरती अइसन धिया जानकी
सुख-दुख में धिरिजा धरिहें
रहिहें चरन–कमल जोहत
लँउड़ी अइसन सेवा करिहें"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहत-कहत में फूटि चलल
गर से माया महतारी के
सुनत रहसु मन मारि राम
अब रागल जनक-दुलारी के

तन-मन के बेहाल करेले
बिदा होत बेटी एके
जनकपुरी के जियरा जाली
जवरे चारि धिया लेके

डोला उठल निहारत खा
बा लोर भरल सभ का आँखी
आङन-घर भकसावन लागे
कुँहुँके पिंजड़ा के पाँखी

भइल चले के बेरि, बजनियाँ
लोग बजावत बा बाजा
समधी का गुरु-उपरोहित के
मान करसु दसरथ राजा

नेग सभे नोकर-चाकर
पवनिनि के हाथ खोलि दिहले
पाँव पूजि बिप्रन के तब
नइ के असीस मनगर लिहले

मिलनी होत देखि सभ से
बरिअतिहा अगराइल बाड़े
समधी का सोभा बिदेह
कर जोरे अब आइल बाड़े

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"रहलीं हाँ ना अपने सभ के
जोग, अवधपति ! साँच कहीं
रघुवंसी का चरन धूरि से
भइलीं हीरा, काँच रहीं"

कहले राजा जनक राम से—
"हमरा ना अतना काबू
अजसी ना होखे पवलीं हम
दीं रउआ के का बाबू ?"

राम - लखन – सत्रुघन - भरत
'बाबूजी' कहि-कहि के नवले
खोलि हिया अँकवारि बान्हि
बेटा के सुख बिदेह पवले

मिथिलापति कौशिक का आगा
अइले भूँइपरी कइ के
कइले बिदा सभे के, रिसि के
चरन-धूरि माथे धइ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ल

बड़-बड़ जतने सिया उपरइली
फारत भूँइ कठोर
पुतरी अलोत नयन के गइली
सोभा वा अब लोर

ताकल जा ना तनिक केहू से
सून भवन का ओर
छवलस दिन-दुपहरिया अन्हरिया
अखिया आगा घोर

गह-गह चह-चह गइले कहाँ दो
भइल बढ़ल मन थोर
खूँख बनल अब ठकचल खजाना
पइसल अइसन चोर

हँकरे-डँकरे गइया-बरध ना
पंछी बन्हलन ठोर
थथमा लागल बहता पवन के
जल में परल ममोर

पोखर का पँजरा ना लखाला
बिहने – साँझि बटोर
डोला उठते भइल तिरहुत के
कँवल - करेज - खँखोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व

रथ बढ़ल राह पर जात
लवटि रहलि बरिआति दूरि के, अजब उछाह जनात

हयदल-पयदल के पूछो, बा रथ के जहाँ जमात
हाथी के बा हारि चलत, ना गनले ऊंट गनात

आगा-पाछा रच्छक-दल लागल जाला अगरात
दुलहा-दुलहिन के रथ चारो बीचे बीच लखात

कुल-गुरु, राजा, मुनिबर के रथ चलल साथ जवरात
पाइ सुपास पड़ाव परत, बा दल के जिया जुड़ात

मुँह जोहत सभ कर दसरथ पूछसु अहगरि के बात
भावे-रुचे जवन जिनिका ऊ जाले पीअत-खात

रसगर डहर निहारत बीतत अगहन के दिन-रात
जनकपुरी अब दूरि भइलि, बा कोसलपुर निअरात

अवध पा रहल बा जे सुख ना कहले आजु कहात
अगवानी में ठाढ़ लोग के नइखे नयन अघात

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श

राम-लछुमन बहरा कौशिक मुनि का जवरे गइले
कार अचरज के कतने उनुका कहला से कइले

गाँव - नगर सुनले रहुए जे राम दुलहा भइले
आजु लउकल चारो भाई कनियाँ लेके अइले

आ गइलि बरिअतिया, हाथी-घोड़ा खोलि बन्हइले
गाँठ जोरल जाला दुलहिनि-दुलहा बहुत लजइले

आरती उतरल चारो पारा-पारी परिछइले
डेग डालत दउरा में अधिका लछुमन सकतइले

देव पूजत ठाढ़ भइल दुलहा जब घीव चढ़वले
हाथ चारो सुहवनि के धइ के सेनुर भरववले

माँथ माई-गुरुआइनि का आग जाइ नववले
आसिरबाद दुआरे आइ गुरुन से अपना पवले

कोसिला मयगर महतारी के गुन पवनी गवले
केकई का महिमा के ना जाचक थाह लगवले

खोलि दूनो हाथ सुमित्रा अनघा दरब लुटवली
फूल अस दू गो पतोहि आँचर में आजु उठवली

रंग देखत सीता के सजनी सवखीन सिहइली
रूप तीनों दुलहिनियनि के एके पाइ चिहइली

मान आदर कइले सभ के राजा ना अकुतइले
बात मुनि से सभका सोझा बोले में सकुचइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ष

"बहु बिधि कीन्हि गाधि-सुत पूजा
नाथ मोहि सम धन्य न दूजा

कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी
रानिन्ह सहित लीन्हि पग धूरी

भीतर भवन दीन्ह बर बासू
मन जोगवंत रह नृप रनिवासू"

—रामचरित मानस

राज-भवन का भीतर राखल रिसि कौशिक के बास बा
राम-लखन का गुरु के मुँह जोहत सँउसे रनिवास बा

आपन पुरुखा अस मुनिबर के पुरहर आदर - मान बा
गावल जात अवधपति का मुँह से जिनिकर गुनगान बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा निअरा सभ के हिअरा अब, ना बा जगह दुराव के
जानत बा जग राम-लखन-सत्रुघन-भरत का भाव के

पूजत रही कोसिला साँझे-बिहने रिसि का पाँव के
पावत दरस सुमित्रा गँथली माला मुनि का नाँव के

बूझि गइल केकई रही मन में अब एगो बात के
रोकि सकी ना राम छोड़ि केहू पसरत उतपात के

"भाग हमार जगवलीं हाँ अपने का इहँवा आइ के
दाग हमार हटवलीं हाँ मुनि ! अपना अङे लगाइ के"

—बोलत खा दसरथ कर जोरत कहले फिनु मुनिनाथ से
"धोवल करितीं चरन कमल हम हरदम अपना हाथ से"

विश्वामित्र बिहँसि के कहले—"बहुते होत अकाज बा
आस्रम में हमरा सँपरावे के बड़ लमहर काज बा"

"राउर सेवा में हाजिर ई सँउसे रघु-परिवार बा
माल-खजाना पर हमार ना, रउरे अब अधिकार बा

देत रहबि दरसन, सदईं राखबि लरिकन पर छोह के
डालबि भोर कसूर"—कहत सहले अवधेस बिछोह के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स

महिमा सभ से बढ़ि के जेकर
धन्य-धन्य जुग 'त्रेता'
धङ्ले हा, धनि भाग, धूरि ई
रिसि कौशिक अस नेता
....

आरङ्गा सूरजबंसी सोरह कुल में
राजा 'गाधि' कहइले
'सत्यवती' बेटी के सादी
भृगु 'ऋचीक' से कइले

गोदी में जब 'सत्यवती' का
सुत 'जमदग्नि' उतरले
ओही घरी गाधि राजा के
दिनवाँ दइब सुतरले

कनउजपति अपना सपूत के
नाँव 'विश्वरथ' धइले
लइकइयें में धी - दमाद का
हाथे सँउपत भइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रिसि ऋचीक रहले बड़ भारी
शस्त्र – शास्त्र के ज्ञाता
गुरु - भाई का आगा बिसरल
मामा - भगिना नाता

पढ़सु-लिखसु जमदग्नि-विश्वरथ
बइठसु - डोलसु जवरे
सुनसु लगा के ध्यान मंत्र सभ
सुमिरसु - बोलसु जवरे

मोका मिलते राज-पाट-सुख
कुँअर विश्वरथ पवले
नाता - नेह बहिनिआउर के
कबहूँ ना बिसरवले

भगिनापूत 'परसुधर' रहले
कूदल इनिके दम पर
जिनिका सेना से अभुरा के
'सहसबाहु' भइले सर

रहले त्रेता जुग में एगो
सचहूँ बहुत नछतरी
जवरे कबो विश्वरथ के ना
बइठल जिनिकर पटरी

धइले सङ कतने राजन के
मुनि वशिष्ठ बनि मंत्री
बढ़ि के रहसु विश्वरथ से जे
राजनीति के तंत्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कलह - काँट जब टाँठ हो गइ..
ठानल गइल बदानी
गइलन बनत वशिष्ठ-विश्वरथ
दूनो दुसमन जानी

भइले मीत 'त्रिशंकु सत्यव्रत'
गारह दिनन के संगी
परि के फेरा में बनले जे
बहुते बड़ अछरंगी

बारह बरिस मेघ ना चूअल
भरल आगि कन-कन में
गइल चोर - चंडालन जवरे
वीपति खेपल वन में

बहुरल दिन कहले त्रिशंकु से
कौशिक— "जगि तूं ठानऽ
अपना मंडप का भीतर सभ
रिसि-देवन के आनऽ"

भावल ना तनिको वशिष्ठ के
सभ के बरिजत चलले
मंडप ओर देव-रिसि एको
डेग डरे ना डलले

कइले बहुत किरोध विश्वरथ
आपन नाँव बदलले
बनि के 'ऋषि याजक' त्रिशंकु के
विश्वामित्र निकलले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिले पहिल बनल याजक
जे आरत्र सूरजबंसी राजा
अपना तेजी के फहरावत
चलल ऊँच जे धाजा

सिरिजल कइल देव नवका,
कहि सभ के भारतवासी
निरिखल हा 'एकेश्वर' सगरे
कौशिक अस बिसवासी

खोजे निकसल पहिल पहिल जे
दरस भूँइ पर 'हरि' के
चेला बनले उनुके आ के
'राम' मनुज तन धरि के

कइसे करे बखान गूङ कवि
क्रांति - राग का रस के
चहले विश्वामित्र तबे जग
जानल राम - सुजस के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ह

बड़ भार उतरल, रहसु रिसि निहचिंत बहुते धाइ के
लिहले रहसु बस दूइ, दिहले चारि आठ बनाइ के
अवतार अपरंपार के जनले बहुत उबिआइ के
भगवान मानुस के बतवले बखत-बेरा पाइ के

सभ ज्ञान के भंडार जतना रहे, छितराइल रहे
कुछु जीभि पर, कुछु कान में, सभ भाव भितराइल रहे
कुछु बूड़ि के होखत रहे तर, बहुत उतराइल रहे
लगले बटोरे हाथ से जे 'सूक्त' उधिआइल रहे

रिसि लोग कतने बसत गइलन लागि ठानल कार में
मुनि मंत्र के दरसन करसु रहि घोर जंगल-झार में
कइले बहुत उतजोग, बन्हले तार टूटल धार में
'ऋग्वेद' के रिसि खास विश्वामित्र रहसु जवार में

उपकार कौशिक के कइल जग में जनाइल आजु से
मिथिला, अवध से कम करुष नइखे, मनाइल आजु से
बन ताड़िका के रहे, 'बेदगरभ' कहाइल आजु से
सुभ 'कौशिकायन' नाँव 'बघसर' के धराइल आजु से

अपना निरिख भर सोझ-बक अइलीं उरेहत चित्र के
सकुचीं बहुत हम छुवत हाथे पाँव परम पवित्र के
उनुके भरोसे हम कढ़वलीं बात राम-चरित्र के
रहले जगत के मीत जे धइ नाँव 'विश्व-अमित्र' के

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इमे भोजा अंगिरसो विरूपा दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः
विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरंत आयुः ।

—ऋग्वेद ३/५३/७

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं भुजमुत्थाय कथ्यते
सिद्धाश्रमं समं तीर्थं न भूतो न भविष्यति

—वराह पुराण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन कथ

ठाढ़ होइ हम भूँइ पर, ताकि-ताकि आकास
चाहत बानी कुछु कहल, पाइ-पाइ आभास

गुन गाईला पहिल 'वेद'[1] के
मति मानव के, बिना भेद के

मुँह जोहीला 'बुद्धदेव' के
उचरसु ना जे राखि भेव के

कहत रहसु जे बात खुलासा
गरे लगा के 'प्राकृत' भासा

पाँव पखारीं 'सिद्ध'-'संत' के
बान्हल जे सुर में अनन्त के

'प्राकृत' कबि के करत बड़ाई
मन हमार ना कबो अघाई

फानल जे भासा के घेरा
मानल ना 'संस्कृत' के फेरा

रचि के 'पद' जे कइल भलाई
उपरावल 'दोहा' – 'चउपाई'

---

१. ऋग्वेद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिले 'गोरखनाथ' उतरले
तिनिका बाद 'कबीर' सुतरले
धइले रुचिगर राह 'जायसी'
बन्हले 'तुलसी' घाट राजसी
किसिम-किसिम के बिरहा - गायक
अइलन पोसत धुन सुखदायक

पावलगी सभ के करीं घूमत चारो ओरि
टेढ़-सोझ मात्रा पढ़ीं चउबिस-सोरह जोरि

हईं 'शाहपुर'[२] गाँव निवासी
रहीं 'यारपुर'[३] बनल प्रवासी
होखल अइसन बड़ दुरघटना
छूटल बेख, बनल घर पटना
दरसन नइखे देवालय के
सेवा में रहि 'सचिवालय' के
घरी - पहर पलखत जो पाईं
आपन रचल गीति हम गाईं
कुहुँकि–कुहुँकि के होखल गुन-गुन
किसिम-किसिम क उपरवलीं धुन
सुनिते पंच हमार अरज के
जोरल दू सइ तीस तरज के
मनितीं बड़भागी अपना के
साँच बना पइतीं सपना के
साध अनेक, एक ना साधन
आपन कम, अनकर अधिका दन

---

२. शाहपुर पट्टी (भोजपुर)।
३. यारपुर, पटना–१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेटल ना जवले जग के दुख
भेंटल ना तवले हमरा सुख
कहल करीं ना, रहलीं सहकल
गइलीं बहुत दूरि ले बहकल
लमहर कतो अड़ान ना बहुत छोट अवकाति
सुमिरि-सुमिरि अगिला सुदिन कटलीं पछिली राति

निकसल करे दनादन बोली
भल के गेना खल के गोली
तकलीं ना हम कबो दाव के
राखे ना जनलीं दुराव के
आपन रहनि ठेठ हम चहलीं
हेठ–मेठ का सङे निबहलीं
सहीं आँचि, ना काँच रहीं हम
रुचे झूठ ना, साँच कहीं हम
जनलीं कतने नर-नारी के
देव - दनुज - नर - तनधारी के
गाँवे - गाँवे, नगरे – नगरे
धवलीं धूरि बटोरत सगरे
नीक रहे बस अतने होनी
नून निखरलीं अँवटत नोनी
कबो बनवलीं ना हम सोरा
डललीं ना ज़रला पर फोरा
कइलीं पार घाट हम जतने
लागत गइल भरोसा ततने
रहल दूरि जे ऊ निअराइल
होई सपना साँच, बुझाइल
आजु कहीं अहगरत हम, आपन मन के बात
लागल गरदा–धूरि के मेला उड़से जात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिले हमरा काने 'ईआ'[४]
डललसि गीति सुने के बीआ

बचपन बीतत रहे अकेले
ईआ चलति रहे सङ लेले

छठि, सोहर, माता दाई के—
सुनीं गीति पिंड़िया माई के
गीति बिअहुति बहुते गहि के
सुनलीं ईआ जवरे रहि के

चढ़ल साल सन चँवतिस[५] जसहीं
डोललि भूँइ जोर से तसहीं

गली-सँड़क पर माह बजारे
सुनलीं एगो गाना 'आरे'[६]

पहिले सुनले रहलीं हाँ ना
एको कतो बनावल गाना

आवे जब - जब 'ओट'[७] गाँव में
गीत गँथा जा नाँव—नाँव में

होके ठाढ़ लगावे चाटी
गीति बनावे दूनो पाटी

भासा 'ठेठ' कहावे ओकर
जे बोलसु मालिक भा नोकर

लागे ई कुल्हि नीक बड़, सुनल करीं हम धाइ
सन सैंतिस[८] में पढ़त खा दिहलीं पद्य बनाइ

---

४. बाबूजी के फूफू स्व० बिरिज कुमारी देई जे हमार धरम के महतारी रही।
५. सन् १९३४ ई० ।
६. आरा (भोजपुर)।
७. शाहपुर यूनियन बोर्ड के चुनाव ।
८. सन् १९३७ ई० में ११ बरिस का उमिरि में ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुझला रहे बनल चउपाई
कबहूँ ना दू डाँड़ि भुलाई
'बृज,[९] बूटी,'[१०] जोगी,'[११] रंगीला'[१२]
सब मिलि गावे तेरी लीला'
अस्तुति रहे पहिल कबिताई
गइल हमार छूटि लरिकाई
लागल सावन के सोमारी
भइल भीर देवल में भारी
आन गाँव ले सोर रहे बड़
पहुँचे लागल लोग धड़ाधड़
'नाच भिखरिया के बा आइल'
राह-बाट में सोर सुनाइल
उतरल रहसु 'भिखारी नाई'
बनि के निहुरल बुढ़िया दाई
माथ हिलाइ हाथ चमकावसु
मातु जसोदा के लुलुआवसु
नाचसु ना अपने ना गावसु
तबहूँ काहें दो बड़ भावसु
लगले पाछे झाल बजावे
ताल देइ के भजन सुनावे
अगराइल कतना रहीं घर से गँवें पराइ
बाबूजी'[१३] का हाथ से गइलीं गते धराइ

---

९. ब्रज बिहारी पाण्डेय (शाहपुर पट्टी)
१०. विश्वनाथ राम उर्फ बूटी ,,
११. योगी प्रसाद यादव ,,
१२. रंगीला प्रसाद यादव ,,
१३. स्व० नारायण प्रसाद उर्फ बबन लाल (कवि के पितृ देव)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेटल तहिया से सभ खटका
खुलल नाच देखे के भटका

अपना गाँवें अनते ठावें
धावल फिरीं नाच का नाँवे

देखीं नाच बइठि के जमि के
साज-बाज, गितनी में रमि के

हिन्दी-अङरेजी पढ़लीं हम
कतने खोजि अरथ कढ़लीं हम

कइलीं गद्य–पद्य हम फेटल
नाच-गान के रस ना भेंटल

सुनली चंग बजावल ताली
सायर का मुँह से कउआली

अमर शेख[१४] के गावल सुनलीं
अपना मने-मने हम गुनलीं

जवले कुछु गावल ना जाई
गा के समुझावल ना जाई

मन में तोख-बोध ना आई
तन में जोस उठे ना पाई

रुचिगर राह बाट ना भाई
कलह - काँट अइसन अझुराई

झँखल फिरत अकसर रहीं, एको ना मनमीत
दिलजमई अचके भइल सुनि 'अशांत'[१५] के गीत

लागल नया ढंग के चसका
देखत बरफी बिसरल मसका[१६]

---

१४. महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध जन गायक अभिनेता स्व० अमर शेख
१५. अर्जुन कुमार सिंह 'अशांत'
१६. गूर के बहुत सोन्ह मिठाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुरुता परल साल 'पैंतालिस'
पहिले पहिल चढ़ल जब पालिस
मिलल गाँव में काम पढ़वनी
रहे बरध खातिर जस दवनी
गुरुवर 'लाल सत्यनारायण'[१७]
दिहलीं चरन-सरन मनसायन
नाटक रचीं, बनाईं कविता
राखीं ना अपने का हमिता
करीं उहें के नकल उतारल
अटपटाह अपनहूँ उचारल
सन 'सैंतालिस' में आजादी
आइलि, सगरे फिरल मुनादी
काल भइल 'अरतालिस' आ के
गइले 'गान्ही' गोली खा के
पढ़ल करीं अखबार चाव से
देखत दुनियाँ सोझ भाव से
फरहर रहलीं हाथ-पाँव से
अपनइती बड़ रहल गाँव से

हिन्दी - भोजपुरी रहे साधन बनल हमार
कविता - गीत बनाइ के परगट करीं बिचार

हरख मानि के लोग सराहे
जरत ना रहे केहू डाहे
भाषा-छंद–व्याकरण ढब के
पंडित 'चन्द्रबली'[१८] गुरु तब के
करीं दंडवत 'माधव जी' के[१९]
भखले रहीं भाग अँकुरी के

---

१७. सत्यनारायण लाल, सुप्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्रज्ञ।

१८. फैजाबाद जिला के स्व० उपाध्याय पं० चन्द्रबली मिश्र।

१९. स्व० डा० भुवनेश्वर नाथ मिश्र 'माधव'। आजु से ओनतिस बरिस पहिले उहाँ का आरा जैन कालेज में पढ़ावत खा हमरा आइ० ए०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिले पहिल 'भरवली'[२०] गइलीं
भात 'महेश्वर'[२१] जी के खइलीं

उनुका भिरी बतुस जे पवलीं
आँखि फारि के निरिख लगवलीं

लोक गीत के बड़हन मरमी
लिखसु निबन्ध सनातन-धरमी

'गीता प्रेस' से रहे रहवट
यू० पी० में बान्हल जिनिकर ठट

रहसु चलावत जात हराहर
कलम 'भिखारी ठाकुर' ऊपर

कहीं खोलि के बात भितरिया
माने जनि केहू मसखरिया

भोजपुरी से बढ़लि इयारी
बनले मन के मीत 'भिखारी'

पढ़ल - गुनल, देखल-सुनल तबले रहे जियान
जब ले अपना भूँइ का ओर गइल ना ध्यान

'चीना-कोठी'[२२] में फिनु चलु मन
'लोदीपुर'[२३] में बा गाड़ल धन

के इम्तिहानी 'कापी' पर लिखल एह आसिरवादी लाइन के सए-कड़ लइकन से ठकचल 'हाल' में अपना मुँहे उचार कइले रहीं :–

"Whatever you have written is correct, to the point and full of literary flavour. You have got a very nice conception of literature and you will in course of time prove an excellent writer in Hindi."

(Sd.) B. N. Madhav
26-10-44

२०. भरवली गाँव, शाहपुर पट्टी से पवने दू कोस उतर-पछिम ।

२१. 'जनकवि भिखारी ठाकुर' के लेखक महेश्वर प्रसाद ।

२२. पटना में 'बुद्धमार्ग' पर पुरान आ मसहूर खपड़पोस बङला ।

२३. पटना के एगो पुरान महल्ला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पवलीं जहँवा बास प्रीति के
पढ़लीं पुस्तक राजनीति के
मंदिर–मसजिद अकिलमन्द के
स्मारक[२४] वा 'सच्चिनानन्द'[२५] के

बइठत तहँवाँ साँझे-भोरे
बूझत गइलीं थोरे - थोरे
पढ़लीं 'लिंग्विस्टिक सरवे'[२६] जब
भोजपुरी के भइल जोह तब
रहि 'अशांत' का अवरे–कवरे
'सीताराम'[२७], 'धवल'[२८] का जवरे

चहलीं कइल सलाह एक हम
पवलीं भाव-बिचार नेक हम
पाईं जा कतहूँ ना तितिके
रहे नाँव 'चेतना समिति'[२९] के

चहलीं जा कुछु कार जनावल
'भोजपुरी परिवार'[३०] बनावल

'विष्णुदत्त'[३१] जी बगसर बासी
रहले साथे गइल सुभासी

---

२४. सिनहा लाइब्रेरी, पटना।
२५. स्व० डा० सच्चिदानन्द सिनहा।
२६. प्रख्यात भाषा विद जार्ज ग्रियर्सन के सुप्रसिद्ध कृति।
२७. सीताराम चन्द्र शरण 'राम', सिंचाई विभाग के हमार सँघतिया।
२८. धीरेन्द्र प्रसाद सिनहा 'धवल' ,, ,, ,,
२९. १९५४ ई० के आस पास पटना में स्थापित मैथिली साहित्य-संस्कृति के स्वनाम धन्य संस्था।
३०. भोजपुरी साहित्य-संस्कृति का उत्थान खातिर पटना के कवि-लेखकन के एगो संस्था जेकर १९५९ ई० में स्थापना भइल।
३१. विष्णुदत्त मिश्र, हिन्दी साहित्य-संघ, गर्दनीबाग, पटना के सदस्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोहत - जोहत एक के मिलले दूइ सहाइ[३२]
लिहले कोरा एक 'शिव', दोसर गरे लगाइ

सँपरल ना सांस्कृतिक प्रदर्शन
होखल तब 'अँजोर'[३३] के दरसन
'पाँड़े जी'[३४] अस अवढर दानी
राखत अइलीं हाँ पत–पानी

बनल शतायु रहीं कम से कम
भोला से माङी अतने हम
जइसे रहसु बड़न सङ लरिका
बीरा पाँड़े जी हम खरिका

बिसरल नइखे सन् अनठावन
बिरहा सुनलीं वड़ मनभावन
जगली हमरो सूतल सुरसति
लगली लवटे फिनु रूसल मति

'धरती मइया'[३५] सोझा अइली
माथे वड़का बोझा धइली
कबो अकेले, कवहूँ जवरे
लगलीं हम ढबढबवा पँवरे

थाकि-थाकि के धइल करीं दम
थाहि-थाहि के भइलीं निभरम
लोग बीच रहि के अकसरुआ
बनलीं अपना मने पहरुआ

---

३२. स्व० आचार्य शिवपूजन सहाय आ पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय।

३३. भोजपुरी परिवार, पटना के त्रैमासिक मुखपत्र (भोजपुरी)।

३४. पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, एडवोकेट; अध्यक्ष भोजपुरी परिवार, पटना आ सम्पादक 'अँजोर'।

३५. हमार एगो भोजपुरी कविता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिचिरी जे खांचल करीं, से लागे बड़ नीक
टेढ़-सोझ कहनाम से भरल कबो ना हीक

गुन गाईं कतना बगसर के
अगहर बा जे लमहर लर के

जोड़ी अजगुत हिया-हरन के
रहे 'विप्र'[३६]-'मंगलाचरण'[३७] के

सम्मेलन में बहुत बड़ जतन
कइले रहन चढ़ाइ नवरतन[३८]

कबि लोगन के परिचे पा के
लवटल रहीं बहुत अगरा के

बिसरी ना जुटान गहमर[३९] के
पटतर ना जलसा लमहर के

एक-एक से कबि के सुनलीं
अपना मन माफिक धुन चुनलीं

नकल करे में हम ना ओजीं
तरे पइसि के कउड़ी खोजीं

हमरा लेखे बा तुक जोरल
जइसे पाकल तरकुल फोरल

कहबि साँच हम एगो अइसन
सुनले ना होखबि जा जइसन

केहू ना हमरा के डाँटल
ना हमार तुकबंदी छाँटल

---

३६. कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', बक्सर में भोजपुरी साहित्य मंडल के प्रतिष्ठापक। ३७. स्व० मंगलाचरण उपाध्याय, भो० सा० मं० बक्सर के सबल स्तंभ। ३८. नवका भोजपुर में राजा भोज के 'खँड़हर' जहँवाँ जनवरी १९६० में अखिल भा० भो० स० भइल रहे। ३९. गहमर (गाजीपुर) में मार्च १९६९ में भइल भोजपुरी संसद, वाराणसी के साहित्यिक-संस्कृतिक सम्मेलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना जोमे हम रहीं जोंतत उखड़ल खेत
जगन्नाथ[४०] कबि टोकि के लगले करे सचेत

रंग-रूपगर, गुन के आगर
'ब्रजकिशोर'[४१] जी बहुत उजागर

करकस बानी में रस लिहले
अजसी का हाथे जस दिहले

संस्कृत भासा के व्याख्याता
भोजपुरी के सुर-धुन-दाता

गुन बसंत[४२] जी के का गाईं
सोझा कुछुओ कहत लजाईं

पँजरा बइठा के बतिआईं
पाण्डे जी 'श्री राम'[४३] कहाईं

नामी 'योगी' के संपादक
आपन संस्कृति के आराधक

जगहा भोजपुरी के दे के
अमर रहीं निरमल जस ले के

जोरीं कर महेन्द्र शास्त्री के
रास बिहारी शर्मा जी के

स्वर्ण किरण,[४४]सतीश[४५]प्रणयीजी[४६]
शैदा[४७],भानु[४८], हरेन्द्र[४९] त्रयीजी

आंजनेय[५०], अवधेश[५१], बंधुवर
हीत त्रिवेदी लक्ष्मीशंकर[५२]

---

४०. गीतकार जगन्नाथ। ४१. प्रो० ब्रजकिशोर मिश्र। ४२. डा० बसंत कुमार। ४३. श्रीराम पाण्डेय। ४४. डा० गोपाल जी 'स्वर्ण किरण'। ४५. सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'। ४६. डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी'। ४७. विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा'। ४८. भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु'। ४९. हरेन्द्र देव नारायण। ५०. अनिल कुमार राय 'आंजनेय'। ५१. अवधेश प्रधान। ५२. लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छंद

कतना गनाईं नाँव हम उत्तर प्रदेश, बिहार के
श्रीनेत[५३] से श्रीमंत[५४] ले रखले निगाह दुलार के
पवलीं सभा में चन्द्रशेखर मिश्र अस दिलदार के
पइतीं सराहे जोग सुर पाण्डेय राम विचार के

दोहा—भइलि 'विबेकी'[५५] मति इहाँ ताकि 'त्रिलोचन'[५६] ओर
'मोती'[५७] बनल 'प्रभात'[५८] सङ जहाँ भूँइ के लोर
ध्रुवनारायण[५९], चन्द्रिका[६०], 'भ्रमर'[६१], 'अनिल'[६२], प्रभुनाथ[६३]
लखलीं स्वामीनाथ[६४] के रामवली[६५] का साथ

दुर्गाशंकर[६६], खाकी[६७] बाबा
लोग मनोरंजन[६८] अस ना बा
भइले ठाढ़ उदय नारायण[६९]
पवले कृष्णदेव[७०] मनसायन
जोहसु जरि रघुवंश[७१] वेद में
सूझ दूरि के बा 'त्रिवेद'[७२] में
मूल रोपि राहुल[७३] जी गइले
विमलानन्द[७४] पटावल कइले
पहिले पहिल 'झड़प'[७५] जी जगले
परमेश्वरी लाल[७६] सङ लगले

---

५३. श्रीनेत राय, इंजीनियर। ५४. सिपाही सिंह 'श्रीमंत'। ५५. डा० विवेकी राय। ५६. त्रिलोचन शास्त्री। ५७. मोती बी० ए०। ५८. केदार नाथ मिश्र 'प्रभात'। ५९. ध्रुवनारायण सिंह। ६०. चंद्रिका मिश्र। ६१. दिनेश 'भ्रमर'। ६२. बिजेन्द्र 'अनिल'। ६३. प्रभुनाथ मिश्र। ६४. डा० स्वामीनाथ सिंह (भोजपुरी, संसद, वाराणसी)। ६५. राम वली पाण्डेय। ६६. स्व० दुर्गाशंकर सिंह 'नाथ'। ६७. स्व० महर्षि खाकी बाबा। ६८. स्व० प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद सिनहा। ६९. डा० उदय नारायण तिवारी। ७०. डा० कृष्णदेव उपाध्याय। ७१. 'भोजपुरी' संपादक रघुवंश नारायण सिंह। ७२. डा० देव सहाय त्रिवेद। ७३. स्व० म० पं० राहुल सांकृत्यायन। ७४. दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती। ७५. कुलदीप नारायण राय 'झड़प'। ७६. डा० परमेश्वरी लाल गुप्त।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संग्रह कइ कहनी-गीतनि के
पूछसु हाल हीत-मीतनि के
देस-बिदेस जोह बा जेकर
ऊ गणेश[७७] चौबे जी के घर
हरिश्चन्द्र[७८],बलदेव[७९], बीर[८०]के
भारवि[८१] रमता[८२] राहगीर[८३]के
मुँहदूबर,[८४] प्रदीप,[८५]मुखिया के[८६]
बिनई अनुरागी,[८७] दुखिया के
पाण्डे कपिल[८८]सुरेन्द्र[८९]अनुज[९०]के
रामेश्वर[९१]राकेश[९२] मनुज[९३] के

सत्यदेव,[९४] गोरक्षहरि,[९५] सलिल,[९६] सदय,[९७] निर्भीक[९८] परमेश्वर,[९९] बेसुध,[१००] बिधुर,[१०१] अरुण,[१०२] उमा[१०३] वेलीक काश्यप,[१०४]पाठक[१०५]चौधरी[१०६]किरण[१०७]अशोक,[१०८]बिचित्र[१०९] नागार्जुन,[११०] अरविन्द जी[१११] सभे आपने मित्र

---

७७. पं०गणेश चौबे ७८. हरिश्चन्द्र प्रसाद ७९. बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव ८०. विश्वनाथ प्रसाद 'वीर' ८१. अरुणमोहन 'भारवि' ८२. रमाशंकर द्विवेदी 'रमता' ८३. राहगीर ८४. राघव शरण मिश्र 'मुँह दुब्बर' ८५. लक्ष्मण पाठक 'प्रदीप' ८६. रामजी सिंह 'मुखिया' ८७. जर्नादन पाण्डेय 'अनुरागी' ८८. पाण्डेय कपिल ८९. पाण्डेय सुरेन्द्र ९०. पाण्डेय चन्द्रविनोद ९१. रामेश्वर प्रसाद सिनहा ९२. प्रो० सर्वदेव तिवारी 'राकेश' ९३. मदन मोहन सिनहा 'मनुज' ९४. डा० सत्यदेव ओझा ९५. गोवर्द्धन सिंह 'गोरक्षहरि' ९६. डा० बच्चन पाठक 'सलिल' ९७. कन्हैया सिंह 'सदय' ९८. रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' (जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद के मन्त्री) ९९. परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी' १००. डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा) १०१. रामवृक्ष राय 'विधुर' १०२. गंगा प्रसाद 'अरुण' १०३. प्रो० उमाकान्त वर्मा १०४. प्रि० रामेश्वर सिंह काश्यप (लोहा सिंह के प्रणेता) १०५. प्रि० डा० जितराम पाठक १०६. चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह १०७. गणेश दत्त 'किरण' १०८. अशोक द्विवेदी १०९. कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र' ११०. हिन्दी के 'नागार्जुन' आ मैथिली के 'यात्री' १११. रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम बुझावन[११२] बाबू मनगर
कहसु कन्हइया[११३] बात पसनगर
मिसिर महंथ[११४], बंधु तइयब[११५] अस
करसु नेह 'करुणेश'[११६] छोह वस
राखसु सङे भगवती[११७] दस के
दरस संघ[११८] में रहे 'सरस'[११९] के
भावल कथ 'विनीत'[१२०] 'नीरव'[१२१]के
सत्यदेव,[१२२]हरिहर,[१२३] भैरव,[१२४]के

जेही तनिका भरि मुँह बोलल
फिरलीं तिनिका जवरे डोलल
राखत आइल सभ से हितई
टूटल जोरि-जोरि के चित ई
जस-अपजस, परसंसा-गारी
बन्हले बानी भरि अँकवारी
साधू-संत, सहीद देस के
नेता, कवि-लेखक विदेस के
ज्ञानी-बिज्ञानी दुनियाँ के
जानीं इष्ट देव गुनियाँ के
मानीं नाता एक राम के
धावन बनि अनगिनित धाम के

चालिस बरिस भइल इहाँ देखत बाढ़ि-सुखारि
लागल तन-मन के बहुत भारी ~~बहुत सुखारि~~ हलुक बयारि

११२. प्रो० राम बुझावन सिंह ११३. कन्हैया जी ११४. डा० महंथ मिश्र ११५. तैयब हुसेन 'पीड़ित' ११६. मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश' ११७. भगवती प्रसाद 'चित्रकार' ११८. साहित्य संघ गर्दनीबाग, पटना, ११९. स्व० सुरेश दुबे 'सरस' १२०. राम इकबाल सिंह 'विनीत' १२१. नरेश 'नीरव' १२२. सत्यदेव नारायण सिनहा १२३. हरिहर प्रसाद (डुमरी, भोजपुर) १२४. भैरवनाथ पाण्डेय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पसरवलीं हम ढेरि साध के
सँपरवलीं ना एक - आध के

जोहत रहीं मीत हम मयगर
रहले कतो हीत ना दयगर

जीअत अइलीं साँस रोकि के
पीअल कइलीं लोर लोकि के

सीअल के कब लाद भोंकि के ?
खोरल के ना भउरि झोंकि के ?

अपना मन में आजु धुँआईं
सपना लहसावत मुरुझाईं

लागल बा लोही के घेरा
भागल ना बदरी के फेरा

बढ़ल रहे मन, बनल थोर अब
गइलि राति ना भइल भोर जब

चहलीं ना बूड़ल - उतराइल
चललीं हाँ अबले उधिआइल

हँकरत फिरलीं हाँ छिछिया के
मनगर बनलीं ना घिघिआ के

चाहत बानीं अब चिचिआइल
थाहल तनिका बाढ़ि फफाइल

अँवटल भाव-समुद्र के चाहीला बनि ढीठ
तर राखत जल खार हम मेघ उठइतीं मीठ

आइत तनी छोह के बरखा
जाइत गलि-बहि इरिखा-करखा

भागित लहर, जुड़ाइत छतिया
लागित नेह-लतरि में भतिया

जबरे रहल करित दिन-रतिया
हियरा - मतिया बनल सँघतिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहित - सुनित केहू दू वतिया
अइसन होखित ना दुरगतिया

वइठल जाला गाल फुला के
अँइठत बा गर काल झुला के

केहू नइखे मन से बोलत
वान्हल गँठरी धन के खोलत

सगरे के वस एक हाल बा
पहिले अस ना रहनि-चाल बा

सभ के सभ अब पढ़त ताल बा
मितवा मनगर नगद माल बा

मतलब भर के इहाँ इयारी
झोंकि रहलि जग के भनसारी

ना लउकत के जान उबारी
के लहकत ई छान्हि उजारी

जहँवाँ जोहीं छाँह हम सूझे तहँवाँ आगि
जगहा आपन छोड़ि के जाईं कहँवाँ भागि।?

हमरा सवख जिए–जागे के
रन में जिनिगी का लागे के

चाहीं ना पाछा भागे के
राही बनल रहीं आगे के

अनका के ना आजु अढ़ाइबि
अपने माथे बोझ चढ़ाइबि

हम ना कवनो पाठ पढ़ाइबि
पहिले आपन डेग बढ़ाइबि

देखबि के कब पँजरा आई
जोरत तुक हमरा अस गाई

आई केहू फरहर भाई
जे हमरा से बढ़ि के धाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब हमार कुछु कार लखाई
मुँह निहारि ना नाँव धराई

छपकल चोर अन्हारा भागी
घर - बन जहिया जागे लागी

लागल जे कठमुरुकी छूटी
बादरि हटी, किरिनियाँ फूटी

सँसले बा जे सपना टूटी
निहँसी ना नयना सुख लूटी

अब ना मूँदबि आँखि हम कहबि खोलि के कंठ
गर जाँतल करिहें इहाँ कबले सूखल संठ ?

उनुका कहले ना कुछु बोलबि
जहँवाँ–तहँवाँ ना अब डोलबि

जोहबि आपन दरद–सँघाती
छोड़बि सभ के बान्हल गाँती

जे कुछु कहल-सुनल अबले ना
जे कुछ पढ़ल-गुनल अबले ना

जे बा तरनाइल भा अँइठल
उनुका जवरे पटरी बइठल !

अजमाइबि आपन बल–बूता
सझुराइबि अझुराइल सूता

चरखा कातबि, करघा गाड़बि
सरदी, गरमी, बरखा, आड़बि

अधनंगा के राखबि परदा
मुँहदूबर के पोंछबि गरदा

नइखे लूरि भरे के गगरी
बान्हबि ना लङटा के पगरी

अबले सहलीं बहुत जिआनी
कबले हटी हमार हरानी !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झलकल कतनो, रस ना पवले
मन–मिरिगा रेती पर धवले
माङल कइलीं हाँ इहाँ ज्वालामुख से नीर
घोंटत गइलीं हाँ जहर दाह-नदी का तीर

हँसि-हँसि सहलीं कलुछ छँवक के
कसि–कसि दबिला चलल दँवक के
जरि के जीव बनल बा फुटहा
खइलीं चाभुक रहि के खुँटहा
लागत जाला घाव कुजगहा
साँसति में डलले बा पगहा
टूटति नइखे मोह-रसरिया
लागलि जाँते घेघ फँसरिया
परल-परल बा मन उबिआइल
करम-धरम ना कुछु उजिआइल
जोर चलत ना, थोर बनत मन
गोड़ बथत बा, थाकि रहल तन
जो हम बइठबि बनि के थउवा
चोंच चलावल करिहें कउवा
करीं दया हे देबी दुरुगा
अबहूँ बकसो बिलरी मुरुगा
रखिती सुरसति चरन नगीचे
बसितीं ना उरुअन का बीचे
हंस-बंस ना भले कहइतीं
'भोर भइल' कहि सोर मचइतीं
ना रहि पाइत सुर मधिम, करित लोग अँखियान
सुनि के ई बोली टनक होखे चलित बिहान

ऊ बिहान जे साँझि ना बनी
ऊ जिनिगी जे काल ना गनी
नयन हमार उघारल चाहे
कलम कुबानि सुधारल चाहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के इहँवाँ ई कुल्हि बतिआई ?
जे कहलीं हम से पतिआई ?

उलुटे लोग ठहाका मारी
कतने मन में दीहें गारी

केहू झूठ कहे ना पाई
माथे चढ़ि के रही सचाई
खल–कुचरा ना सोझा अइहें
भरम परल भल लोग लजइहें
हमरा बा भरोस सज्जन के
खटका हटी कबो दुरजन के
जे जनलीं हाँ नीमन अनते
बनल जतन से बनते–बनते
कठुअइला से काम चली ना
तेज आँचि बिनु काँच गली ना
अगिनि-बास बा चनन-बाँस में
गरम राग बा नरम साँस में

धन्हकवला बिनु काठ के भागी ना ई जाड़
सहकवला से जगत में बोले बढ़ि-बढ़ि राड़

ठाढ़ भइल हम चाहत बानी
भूँइपरी ई तन ना जानी
सोझ मने जो ठग ना मानी
टूटी रग तब रोई कानी
बइठल काटत केहू चानी
अँइठत बनि के राजा-रानी
कतहूँ केहू सहत हरानी
पेरत बालू, महत बा पानी
छूटत नइखे गर से घानी
छोपल बरध बनल नर-ज्ञानी
सोचत-सोचत भइलीं बाउर
समुझी सभे, कहीं का आउर ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब अधिका ना पीर सहाला
हमरा से ना धीर धराला
खोजबि धाइ सँजीवन बूटी
बीर लखन के मुरुछा छूटी
देसु पवनसुत माङीला हम
राम-चरन-रज के सभ दिन हम
कालकूट धर अवढर दानी
रखिते एह कंठ के पानी
जय सीता, जय केकई, जय-जय भरत भुआल
जय राधा, जय देवकी, जय गिरिधर गोपाल
जय सुर-सन्त, भालु-वानर गन
जय तपसी के भगत बिभीसन
जय धरती, जय परबत, जय बन
जय सागर, जय नदी, जय गगन
जय भारत, जय विश्व, जय जगत
बानीं हम जय भोजपुर कहत
अचरज जनि केहू कुछु जानो
टोल-परोस मोल अब मानो
कम नइखे कतहूँ भयवध में
'कुरु'-'कोशल' भा 'अंग'-'मगध' में
'करुष' कहाइल चप्पा-चप्पा
कबो भोजपुर के ई तप्पा
गंगाजी के दूनो पाही
भइलन मल्ल बीर उतसाही
रहल कलम-तरुआरि हाथ में
ज्ञान गोड़ में, मान माथ में
भोजपुरी हऽ ओकर बोली
खाइल जे सरहद पर गोली
भरल भवन में बा अकसरुआ
नाता जोरसु पूत दुलरुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखड़ेला उपहास अब भावे ना परहेज
बोली में नइखे इहाँ कम कतहूँ से तेज
आपन बोली हम ना छोड़बि
अनकर खातिर मुँह ना ओड़बि
दूध सङे बा जोरल नाता
बोले बात सिखवली माता
भरल हुँकार बाप-भाई के
बोली में दुलार माई के
छोह धइल बा गाँव-नगर के
सुख-सरेह के, मोह डगर के
'डामिल हबड़ा' कहियो गइलीं
काने परत सबद अगरइलीं
'ए दिके एसो', 'एने आवऽ'
के बा कतना मीठ बतावऽ
'आओ इधर' सुनत सकुचाईं
रस काहें दो कम कुछु पाईं
हईं घासि गंगा - घाटी के
ढेला भोजपुरी माटी के
खर्‌ह-पतलो जे सँपरल लिहलीं
नाँव 'कौशिकायन' धइ दिहलीं
महङ माल सहता बजार के
विज्ञापन ई मुँह लजार के

सोरठा—तींत-मीठ भा खार कहलीं बे कहले बहुत
सुनिते चतुर-गँवार लागल बा अब लालसा
टेढ़—सोझ तुक-तार लोक-वेद से जोहि के
मात्रिक छंद-बिचार कइलीं अपना बूझ भर

दोहा— वाल्मीकि के ढंग ना, ना तुलसी के लूरि
कबि-लेखक का पाँव के पइतीं धोवे धूरि
कहि पवलीं ना हीक भर रुचिगर कथा अगाध
कर जोरीला पंच के छमा करीं अपराध

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon